चन्दामामा
अगस्त १९७४
1
Re

Photo by: VIDYAVRATA

GOD of PROSPERITY

राम और श्याम के साहसिक कारनामे
जादूगरनी के जाल में!

जंगल में हुई रात भयानक, झोपड़ी उनको दिखी अचानक.

वहाँ न था इन्सानों का घरबार, मेंढकों, खरगोशों की थी भरमार.

ओ रे ओ... वे बोले सब, देखा जानवरों को बोलते जब.

"बचाओ, बचाओ हमारी जान, हम हैं तुम्हारे जैसे इन्सान."
इतने में भयानक जादूगरनी आई, लाल आँखें दिखाकर वो चिल्लाई

"अब तुम मेरे फंदे में हो, बना दूँगी मैं मेंढक तुमको."

तरकीब लड़ाई राम-श्याम ने, पॉपिन्स उछाले जादूगरनी के सामने.

जादूगरनी खुशी से मुस्कराई, और सबने आजादी पाई.

PARLE POPPINS
FRUITY SWEETS

VITREOUS सैनेटरीवेयर ® वॉल टाइल्स ®

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बने हुए

हिन्दुस्तान सैनेटरीवेयर एण्ड इण्डस्ट्रीज़ लिमिटेड

सोमानी-पिलकिंगटन्स लिमिटेड

२ वेलेसली प्लेस, कलकत्ता-७०० ००१

चन्दामामा के ग्राहकों को सूचना

यदि आप अपना पता बदल रहे हों, तो पांचवीं तारीख़ से पहिले ही अपनी ग्राहक-संख्या के साथ, अपना नया पता सूचित कीजिये। यदि विलम्ब किया गया, तो अगले मास तक हम नये पते पर 'चन्दामामा' न भेज सकेंगे। आपके सहयोग की आशा है।

डाल्टन एजन्सीस, मद्रास -६०० ०२६
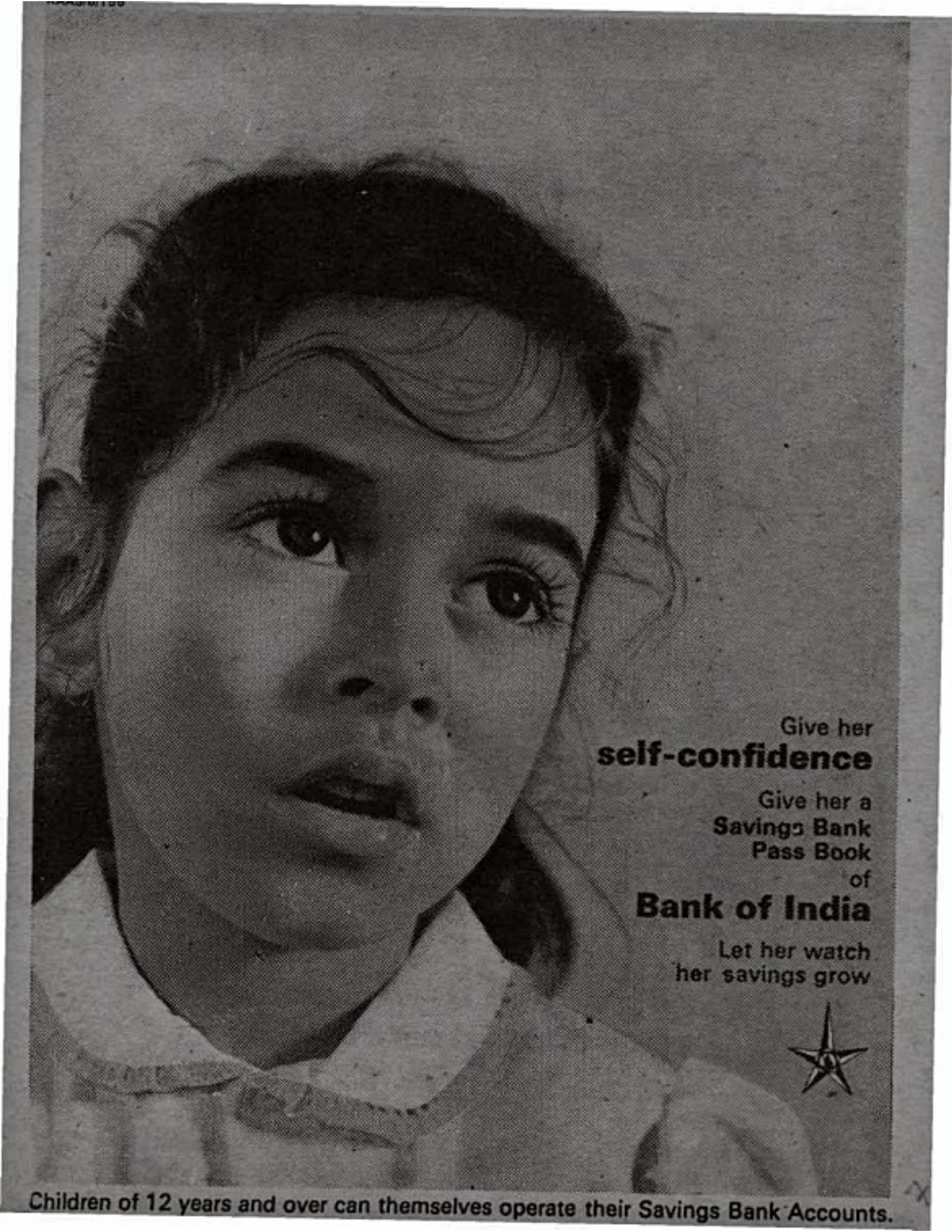
Give her
self-confidence
Give her a
Savings Bank
Pass Book
of
Bank of India
Let her watch
her savings grow
Children of 12 years and over can themselves operate their Savings Bank Accounts.

बढ़ते बचपन का साथी – इन्क्रिमिन*!
Incremin*
syrup
बढ़ता बचपन!
ये छलकता उत्साह, ये चुस्ती, ये फुर्ती... ये हंसते खेलते तन्दरुस्त बच्चे... इन दिनों जब इनका शरीर दिन दुगनी रात चौगुनी गति से बढ़ता और विकसित होता, इन्हें इन्क्रिमिन ज़रूर दीजिये। लाभदायक विटामिन, लोहतत्व और आवश्यक अमीनो एसिडयुक्त इन्क्रिमिन बढ़ते बच्चों के लिये बहुत आवश्यक।
इन्क्रिमिन*
इन्क्रिमिन टॉनिक – बढ़ते बच्चों के लिये वरदान!
डॉक्टरों का विश्वासपात्र नाम Lederle सायनामिड इन्डिया लिमिटेड का एक विभाग।
*अमेरिकन सायनामिड कम्पनी का रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क।
SISTAS-INC-3068A HIN

चन्दामामा

संस्थापक : नागिरेड्डी

संचालक : 'चक्रपाणी'

इस महीने की बेताल कथा "दो राजकुमार" प्रसिद्ध जादूगर श्री ए. सी. सरकार द्वारा विरचित है। अंधविश्वासों पर विश्वास करनेवाली जनता धोखा देनेवाले लोगों पर जैसे शीघ्र विश्वास करती है, वैसे समर्थ व्यक्तियों पर विश्वास नहीं करती। यही नीति हम 'जादू का नींबू' नामक कहानी में भी पाते हैं। जनता का हित चाहनेवाले व्यक्ति को कभी कभी उसे ही दूसरों को धोखा देना आवश्यक हो जाता है।

वर्ष : २७ अगस्त १९७४ अंक : २

अमर वाणी

"अंगुल्या कः कवाटम् प्रहरति?"
"कुटिले, माधवः" "किं वसंतः?"
"नो चक्री," "किं कुलालो?" "नहीं धरणीधरः"
"किं द्विजिह्वाः फणींद्रः?"
"नाहं घोराहिमर्थी" "किमुत खगपतिः?"
"नो हरिः" "किं कपीन्द्रः?"
इत्येवं सत्यभामा प्रतिजित वचनः?
पातु व श्चक्रपाणिः

सत्यभामा : "उंगली से किसने द्वार खटखटाया?"
कृष्ण : "नटखट लड़की! मैं माधव हूँ!"
सत्य : वसंत तो नहीं? (माधव का अर्थ वसंत भी होता है।)
कृष्ण : "नहीं, चक्री हूँ।" (चक्रधारी हूँ।)
सत्य : "क्या कुम्हार हो?" (चक्री का अर्थ कुम्हार भी होता है।)
कृष्ण : "नहीं, धरणीधर हूँ।" (भूमि का उद्धार करनेवाला विष्णु हूँ।)
सत्य : क्या दो जिह्वाओंवाले नागराज हो! (धरणीधर आदिशेष भी होता है।)
कृष्ण : "भयंकर सांप का मर्दन करनेवाला हूँ।" (वह सर्प कालीय है।)
सत्य : "क्या गरुड हो?"
कृष्ण : "नहीं, हरि हूँ।"
सत्य : "क्या बंदर हो?" (हरि का अर्थ बंदर भी होता है।)

इस प्रकार सत्यभामा के हाथों हारनेवाले कृष्ण तुम लोगों की रक्षा करें।

सत्यभामा और कृष्ण का संवाद

विचित्र जुड़वाँ

हजारों साल पहले की बात है। श्रावस्ती नगर पर दानशील नामक राजा शासन करता था। आसपास के सभी राजाओं में दानशील की बड़ी धाक जमी थी। क्यों कि उसके यहाँ लाखों की संख्या में सेना थी। दास-दासियों की कोई गिनती न थी। राजा का खज़ाना हीरे, जवाहरात, मणि, माणिक, सोना, चान्दी, नीलम व पन्नों से भरा था। इन सब से बढ़कर राजा के लिए भाग्य की बात यह थी कि एक अनुकूलवती एवं रूपवती कांतिरेखा राजा के रानी थी। इससे भी ज्यादा उल्लेखनीय बात यह थी कि राजा को घमण्ड या अभिमान छू तक न गया था; गरीब व कंगालों के प्रति राजा के मन में अपार दया भरी थी। उसके दान व धर्मों की कोई सीमा न थी। जो भी याचक उसके पास जाता, खाली हाथ न लौटता था। इसी कारण से राजा दानशील नाम से लोकप्रिय बन चुका था।

दिन सुख से बीत रहे थे। एक बार अचानक एक विपत्ति आ पड़ी। रानी कांतिरेखा पूर्ण स्वस्थ थी, किंतु एक दिन अचानक उसका देहांत हो गया। राजा और प्रजा के दुख की कोई सीमा न थी। मगर रोने-धोने से मृत रानी को जिलाना किस के लिए संभव था?

दिन बीतते गये। राजा-प्रजा भी मृत रानी की याद तक करना भूल गये। पर अब सब के दिल में चिंता थी कि रानी के

गर्भ से एक भी संतान के हुए बिना उसका देहांत हो गया है। राजा के अनंतर राज्य दूसरों के हाथों में चला न जाय, इसके लिए राजा को पुनः विवाह करके संतान प्राप्त करना ज़रूरी था। मंत्री तथा सामंतों ने राजा पर ज़ोर डाला कि वह फिर से विवाह करे। राजा को भी उनकी बात माननी पड़ी। एक अच्छे मुहूर्त में राजा ने पुनः विवाह किया। मगर न मालूम कैसी बदक़िस्मती की बात थी कि दूसरी रानी भी कुछ ही दिनों में हठात् मर गयी।

यह बात क्रमशः सारे राज्य में फैल गयी और धीरे-धीरे आस-पास के राज्यों में भी व्याप्त हो गई। मंत्री एवं सामंतों ने इस बार भी राजा पर बहुत ज़ोर डाला और बड़ी मुश्किल से राजा को तीसरी शादी करने से मनवा लिया। मगर कोई भी पिता यह सुनकर कि राजा के विवाह के होते ही उसकी पत्नी का देहांत होगा, कैसे अपनी पुत्री का विवाह राजा के साथ करके मृत्यु के मुंह में भेजने को तैयार हो जाएगा? राजवंशी नहीं, यहां तक कि साधारण गृहस्थ भी अपनी कन्या का राजा के साथ विवाह करने को तैयार न हुए। फिर भी मंत्री और सामंत देश के चारों कोनों में खोज-ढूंढ़कर अपने प्रयत्न में लगे ही रहें।

बहुत समय के उपरांत एक गरीब औरत अपनी पुत्री का विवाह राजा के साथ करने को राजी हो गई। हालांकि वह कन्या गरीब परिवार में ज़रूर पैदा हो गई थी, पर वह रूप और गुणों में किसी राजकुमारी से कम न थी। अत्यंत रूपवती उस कन्या को देख मंत्री और सामंत फूले न समाये। तुरंत यह समाचार राजा तक पहुँचा दिया गया। राजा यह जान कर भी कि इस बार एक साधारण परिवार की कन्या उसकी रानी बनने जा रही है, वह चिंतित नहीं हुआ, बल्कि प्रसन्न होकर मंत्रियों से बोला—"मृत्यु

देवता की दृष्टि में अमीर व गरीब सब समान हैं। मैं इतनी सारी संपत्ति का स्वामी होकर भी क्या अपनी रानियों को बचा सका? अगर जीने का भाग्य होगा तो कोई भी जीवित रहेगी। इसलिए आप लोग जिस कन्या को देख आये हैं, उसके साथ विवाह करने में मुझे कोई आपत्ति नहीं है। मेरी तरफ़ से कन्या की माता को सब प्रकार के आश्वासन देकर आ जाओ।"

यह समाचार सुनकर मंत्री सब उत्साह से भर उठे। कुछ ही दिनों में एक सुमुहूर्त पर उस गरीब औरत की कन्या के साथ राजा के विवाह के सारे प्रबंध किये गये। विवाह के निर्विघ्न समाप्त होने तक किसी में भी हिम्मत न थी। क्यों कि इसके पूर्व राजा ने जिन रानियों के साथ विवाह किया था, वे विवाह के बाद एक सप्ताह के अन्दर ही मर गयी थीं।

मगर इस बार ऐसा न हुआ। क्रमशः दिन और महीने भी निर्विघ्न बीत गये। तब जाकर राजा, मंत्री तथा जनता में भी हिम्मत बंध गई। उस दिन से जनता भगवान से यही प्रार्थना करने लगी– "भगवान, इस तीसरी रानी के गर्भ से ही सही, हमारे राजा को संतान प्रदान करो। हम इससे कुछ अधिक नहीं चाहते। राजा के संतान होने पर हमारे देश का शासन भी सुचारु रूप से चलेगा और हम सब प्रसन्न होंगे।"

प्रजा की प्रार्थना मानों भगवान ने सुन ली। एक और महीने के बाद रानी के गर्भवती होने का समाचार चारों तरफ़ आग की तरह फैल गया। जनता की खुशी का कोई ठिकाना न था। राजा और उसके परिवार की बात कहने की कोई ज़रूरत न थी।

क्रमशः नौ महीने पूरे हो गये। एक अच्छे नत्रक्ष में रानी पद्ममुखी ने सुख पूर्वक तीन जुड़वों का जन्म दिया। राजा बड़ी आशा के साथ इस बात का इंतजार कर रहा था कि वंश की बेल को आगे बढ़ाने के लिए एक पुत्र ज़रूर पैदा होगा, मगर उन तीनों जुड़वों को लड़कियाँ देख राजा थोड़ा निराश ज़रूर हुआ, लेकिन उसने अपनी इस निराशा को प्रकट होने नहीं दिया। यह सोचकर राजा ने अपने मन को सांत्वना दी कि मेरे लिए चाहे लड़के हो या लड़कियाँ–सब बराबर ही हैं। भाग्य में जो बदा है, वही होगा। उसे कोई बदल नहीं सकता। मनुष्य भाग्य के हाथ का खिलौना मात्र है। भाग्य को तथा सुख-दुखों को समान भाव से स्कीकार करने में ही आनंद है। चाहे जो हो, राजा और रानी ने उन तीनों जुड़वों को बड़े ही लाड़-प्यार से पालना शुरू किया।

तीनों लड़कियों के नाम राजा-रानी ने क्रमशः सुहासिनी, सुभाषिणी तथा सुकेशिनी रखे। धीरे-धीरे उम्र के बढ़ने के साथ तीनों लड़कियाँ सुंदर गुड़ियों जैसी प्रतीत होने लगीं। उन लड़कियों का रूप-सौंदर्य देखने वाले सब कोई यह कहकर उनकी प्रशंसा करने लगे–"एक एक लड़की दस लड़कों के बराबर है।"

इस आनंद के बीच कभी कभी कोई अड़चन पैदा हो जाती और राजा तथा रानी को अशांत बना देती। तीन लड़कियों में कभी कोई न कोई लड़की किसी खतरे में फंस जाती और फिर किसी न किसी रूप में

बच जाती थी। यह सिलसिला बराबर बना रहा।

एक बार सुहासिनी अपने पिता के साथ बगीचे में टहल रही थी, तब एक बड़ा सांप उसे डसने को आया। ऐन मौक़े पर राजा ने तलवार से सांप को मार डाला, वरना उसी दिन सुहासिनी की इहलीला का अंत हुआ होता।

एक बार और सुभाषिणी अपनी माता के साथ नदी के तट पर सैर करने गई। नदी तब तक एक दम शांत थी। मगर अचानक उसमें उफान सा आ गया और सुभाषिणी को अपने भीतर खींच ले गई। भाग्यवश उसी वक़्त एक मछुआ उधर आ निकला। रानी को घबराये देख मछुआ तुरंत नदी में कूदकर वह सुभाषिणी को बचा लाया। यदि वह मछुआ उस दिन उधर से आ नहीं निकलता, तो सुभाषिणी नदी के गर्भ में सदा के लिए मिल जाती।

इसी प्रकार एक बार तीसरी लड़की सुकेशिनी एक खतरे से बाल-बाल बच गई। एक दिन सुहासिनी, सुभाषिणी तथा सुकेशिनी बगीचे में फूल तोड़ने गयीं। तीनों तीन टोकरियाँ भरकर फूल चुनकर राजमहल की ओर चल पड़ीं। आगे-आगे सुभाषिणी जा रही थी, उसके पीछे सुहासिनी तथा सुहासिनी के पीछे सुकेशिनी चल रही थीं। तभी अचानक सुकेशिनी चिल्ला कर नीचे गिर पड़ी। बाक़ी दोनों लड़कियाँ घबड़ा गयीं और अपनी माँ के

पास दौड़े जाकर सारा समाचार उसे कह सुनाया।

माँ उन दोनों लड़कियों को साथ ले सुकेशिनी के पास चली आयी, तभी देखती क्या है, पास में फूलों को टोकरी पड़ी हुई है और फूलों के बीच एक काला बिच्छु रेंगते दिखाई दिया। तब जाकर रानी को मालूम हो गया कि काला बिच्छु के काटने से ही सुकेशिनी बेहोश हो गयी है। काले बिच्छु को तुरंत मार डाला गया, तब सुकेशिनी को उठा कर रानी महल के भीतर आ गई। दरबारी वैद्य को तुरंत खबर दी गई। वैद्य ने आकर कोई दवा दी, सुकेशिनी थोड़ी ही देर में उठ बैठी।

इस तरह हमेशा अपनी तीनों लड़कियों में किसी न किसी पर अचानक कोई विपत्ति के आते देख राजा का मन विकल हो गया। जब उससे रहा न गया, तब उसने एक दिन ज्योतिषी को बुला भेजा और उसे अपनी तीनों लड़कियों की जन्म-पत्रियाँ दिखायीं।

ज्योतिषी ने बड़ी देर तक विचार किया, पर उसने कोई जवाब नहीं दिया। इस पर राजा की व्याकुलता और बढ़ गई। उसने ज्योतिषी से पूछा—"ज्योतिषी, लगता है, तुम किसी सोच में पड़े हुए हो। सच्ची बात बतला दो। मैंने इसलिए तुम को बुला भेजा कि तुम असली बात बताओगे!" ये शब्द कहते राजा ने ज्योतिषी का कंधा थपथपाया।

इस पर ज्योतिषी ने बताया—"लड़कियों का रूप-सौंदर्य दिन प्रति दिन बढ़ता ही जाएगा; मगर घटेगा नहीं, लेकिन चिंता की बात तो यह है कि इनका अपूर्व सौंदर्य ही इन लोगों का शत्रु बन जाएगा। ये जन्म से लेकर किसी न किसी खतरे का सामना करती आ रही हैं......" यों कहकर ज्योतिषी रुक गया।

ज्योतिषी के मुंह से निकलनेवाला प्रत्येक शब्द राजा के दिल को घायल बनाने लगा। उनकी आँखों से लगातार

आँसू बहते देख ज्योतिषी बीच में ही रुक गया। मगर राजा ने सभी प्रकार के कष्टों को सहन करते हुए ज्योतिषी से सच्ची बातें बताने का हठ किया। उसने ज्योतिषी को सचेत किया–"बीच में रुक क्यों गये? बताओ।"

"मैं यही सोचता हूँ कि सच्ची बातें बता कर आप के मन को दुख पहुँचाना पड़ रहा है।" ज्योतिषी ने उत्तर दिया।

"तुम चिंता न करो। मैं अपनी लाड़ली बेटियों को बचाने की हर तरह से कोशिश करूँगा, लेकिन तुम कोई भी बात छिपाये बिना सच्ची बातें बता दो; तभी मैं उन्हें बचाने का प्रयत्न कर सकता हूँ।" राजा ने कहा।

इस पर ज्योतिषी ने यों कहा–"राज कुमारियों के सात साल की उम्र के पूरा होने तक खतरों का तांता बना रहेगा। यदि ये सात साल पूरे हो गये तो फिर राजकुमारियों की जान के लिए किसी प्रकार का डर न होगा। इसलिए सात बर्ष के पूरे होने तक हमें इन्हें आँख की पुतलियों की भांति बचाते रहना होगा। इस से बढ़कर जन्मपत्रियों में बताने लायक़ कुछ नहीं है।"

राजा ने ज्योतिषी को अनेक प्रकार के पुरस्कार देकर भेज दिया। इसके उपरांत राजा ने रानी के पास जाकर ज्योतिषी के द्वारा बताई हुई बातों को बड़ी मुश्किल से सुनाया। ये बातें सुनते ही रानी बेहोश होकर गिर पड़ी।

दास-दासियों ने रानी का उपचार किया, तब जाकर रानी होश में आ गयी। राजा रानी को सांत्वना दे ही रहा था, तभी एक दासी ने आकर बताया–"तीनों राजकुमारियाँ बगीचे में बेहोश पड़ी हुई हैं।"

रानी घबराये हुए बगीचे की ओर दौड़ पड़ी। दासी ने उसका अनुसरण किया। राज वैद्य को खबर भेज दी गयी। राजा भी बगीचे की ओर बेतहाशा दौड़ पड़ा।

(और है)

दो राजकुमार

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया, पेड़ से शव उतार कर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा–"राजन, किसी राजकुमारी ने भी तुम्हारी परीक्षा नहीं ली है न? ऐसी परीक्षाओं का कोई अर्थ नहीं होता। उन परीक्षाओं में कौन क्यों विजयी होते हैं, पता नहीं चलता। इसके उदाहरण स्वरूप में तुम्हें हिमबाहू की पुत्री हिमानी के स्वयंवर की कहानी सुनाता हूँ। श्रम को भुलाने के लिए सुनो।"

बेताल यों कहने लगा: प्राचीनकाल में हिमालयों के बीच प्रवेश करने में दुर्गम एक घाटी थी, जिसमें हिमगढ़ नामक एक राज्य था। उसके चारों तरफ़ सीध में खड़े पहाड़ थे। बाहर से घाटी में प्रवेश करने के लिए एक संकरीली घाटी का

वेताल कथाएँ

रास्ता था। इस कारण बाहर के लोग उस राज्य में साधारणतः प्रवेश करते न थे।

हिमगढ़ राज्य पर राजा हिमबाहू शासन करता था। उसके हिमानी नामक एक पुत्री थी। हिमबाहू के और कोई संतान न हुई, अतः हिमानी ही अपने पिता के राज्य की वारिस बनी।

हिमानी जब सोलह वर्ष की कन्या हुई, तब राजा उसके विवाह के बारे में विचार करने लगा। उसके योग्य वर का निर्णय करना भी एक बड़ी समस्या बन गई। क्योंकि उसके साथ विवाह करनेवाला व्यक्ति एक राजकुमार हो और राज्य के शासनकार्यों में हिमानी की सहायता करनेवाला हो। ऐसे व्यक्ति की खोज करना भी आसान काम न था। अलावा इसके हिमगढ़ भी बाहरी दुनिया से कटकर था और अन्य देशों के लोग अनेक प्रकार की यातनाएँ झेलकर उस देश में आते न थे।

हिमबाहू के पास कबूतर थे। राजा ने ये घोषणा पत्र लिखवाये कि अपनी पुत्री के लिए योग्य वर चाहिए, उन पत्रों को कबूतरों के पैरों में बांधकर सभी दिशाओं में भेज दिया।

उस जमाने में समुद्र के तट पर समतात नामक एक देश था। एक दिन रात को प्रलय जैसी बाढ़ आयी और बाढ़ ने उस देश को डुबो दिया। रातों रात समुद्र में राजमहल, खेत, मकान और लोग भी डूब गये। उस वक़्त समतात देश का राजकुमार समुद्रसेन दस साल का बालक था और वह एक बौद्ध मठ में विद्याभ्यास कर रहा था, जिससे वह जीवित रह गया। समतात के डूब जाने से राजकुमार बौद्ध मठ में ही रहकर शिक्षाभ्यास करते सभी विद्याओं में पारंगत हो गया। बौद्ध भिक्षुओं ने उस बालक के प्रति विशेष अभिरुचि ली और उसे अन्य विद्याओं के साथ इंद्रजाल की विद्या भी सिखाई।

समय के बीतते-बीतते समुद्रसेन बाईस साल का युवक हो गया। उसी समय हिमानी के स्वयंवर का समाचार सभी देशों में फैल गया। यह भी कहा जा रहा था कि अनेक राजकुमार हिमगढ़ में जाने का प्रयत्न करके विफल हो गये हैं। समुद्रसेन के पास अपना राज्य न था, फिर भी उसने भी प्रयत्न करके राजकुमारी हिमानी के साथ विवाह करना चाहा। उसने बौद्धमठ के अधिपति के पास जाकर अपना विचार सुनाया।

"बेटा, तुम भी राजकुमार हो, इसलिए जरूर जाओ। तुम्हें हमने राजोचित सभी विद्याएँ सिखाई हैं, मगर तुम जिस जगह जाना चाहते हो, वहाँ तक पहुँचना अत्यंत कठिन साध्य है। वहाँ पर जाने के लिए केवल एक रास्ता है। वह भी अत्यंत खतरनाक है। पालतू गैंडा ही तुमको उस रास्ते से हिमगढ़ तक पहुँचा सकता है। अब तुम्हीं कोई उपाय करो।" मठ के अधिपति ने समझाया।

दूसरे दिन ही समुद्रसेन शिकार खेलने गया। जाल फैलाकर जंगल में से एक गैंडे को पकड़ लाया। एक सप्ताह तक उसको पालतू बनाया, इसके बाद वह मठ के अधिपति से अनुमति लेकर गैंडे पर चल पड़ा।

तीन सप्ताह तक बड़ी कठिनाइयों का सामना करते हुए समुद्रसेन ने यात्रा की और आखिर हिमगढ़ जा पहुँचा। विचित्र

बात तो यह थी कि समुद्रसेन के वहाँ पर पहुँचने के थोड़ी देर पहले रत्नपुर देश का राजकुमार हीरककुमार वहाँ पहुँच चुका था। दोनों की मुलाक़ात राजा के अतिथि भवन में हुई।

"आप यहाँ तक कैसे पहुँच सके?" समुद्रसेन ने हीरककुमार से पूछा।

"मैं विमान में आ उतरा हूँ। हमारे देश में एक बड़ा शिल्पी है। उसने मेरे वास्ते एक विमान बनाया है। बीस हंस मुझे आकाश पथ से उसमें यहाँ तक ले आये हैं।" हीरककुमार ने उत्तर दिया।

"दो राजकुमार राजकुमारी के साथ विवाह करने के प्रयत्न में आये हैं। हमें अब क्या करना है?" राजा हिमबाहु ने अपने मंत्री से पूछा।

"पिताजी, यह निर्णय मुझ पर छोड़ दीजिए। मैं देखूंगी कि मुझे क्या करना है?" हिमानी ने समझाया।

"तुम क्या करना चाहती हो?" राजा ने पूछा।

"मैं एक परीक्षा लूंगी। आप स्वयं देखेंगे कि वह परीक्षा कैसी होती है?" हिमानी ने कहा।

राजा ने दोनों राजकुमारों को समझाया कि तुम दोनों थोड़े दिन विश्राम कर लो। इस बीच राजकुमारी स्वयं अपने पति का वरण करेगी। दोनों राजकुमारों ने अब तक राजकुमारी को देखा न था। उसे देखने की राजकुमारों की इच्छा भी शीघ्र पूर्ण हो गई।

एक दिन प्रातःकाल राजकुमारी की एक परिचारिका आकर हीरककुमार को उद्यान में ले गई। एक झाड़ी की ओट में से उसने राजकुमारी हिमानी को देखा। राजकुमारी एक संतरे के पेड़ के नीचे बैठकर नाश्ता कर रही थी। संतरे का पेड़ फलों से लदा हुआ था। नाश्ता समाप्त कर उसने थोड़े से संतरे खाये। अंत में उसने पेड़ से एक संतरा तोड़कर अमृतफलवाले पेड़ की ओर फेंक दिया।

तुरंत परिचारिकाओं ने राजकुमारी के लिए अमृतफलवाले पेड़ के नीचे बिस्तर लगाया। हिमानी जाकर उस पर लेट गई। तब जो परिचारिका हीरककुमार को वहाँ लाई थी, वही उसे अतिथि गृह में ले गयी।

दूसरे दिन वही परिचारिका आकर समुद्रसेन को उद्यान में ले गयी। हीरककुमार ने जो दृश्य देखा था, वही दृश्य देख समुद्रसेन भी अतिथि गृह को लौट आया।

दोनों राजकुमारों ने आपस में उस दृश्य के बारे में बातचीत की। हीरककुमार ने कहा–"लगता है कि राजकुमारी हिमानी को संतरे बहुत ही पसंद है।"

"हाँ; मुझे भी ऐसा ही लगता है। हम दोनों ने सही अंदाजा लगाया।" समुद्रसेन ने उत्तर दिया।

इतने में राजकुमारी की परिचारिका लौट आयी और बोली–"कल सुबह राजकुमारी आप लोगों से एक के बाद एक से मिलनेवाली हैं। आप लोग उनके वास्ते उचित पुरस्कार लेकर जाइए। परंतु यह बात याद रखिए कि आप में से किनको राजकुमारी वरनेवाली हैं, यह बात आपके द्वारा दिये जानेवाले पुरस्कार पर निर्भर होगी।"

परिचारिका के जाते ही दोनों राजकुमार सोच में पड़ गये। वे आपस में विचार-विमर्श किये बिना अपने अपने कमरों में

चले गये। उस रात को उन्हें नींद तक नहीं आयी।

सवेरे परिचारिका आकर हीरककुमार को राजकुमारी के महल में ले गई। हीरककुमार अपने शाल की ओट में एक संतरा छिपा ले गया और उसे हिमानी को भेंट दी। राजकुमारी ने बड़ी ही विनय के साथ संतरे को स्वीकार किया, उससे स्नेहपूर्वक बात की और उसे वापस भेज दिया। दो-ढाई घड़ियों के अंदर हीरककुमार बड़ी प्रसन्नता के साथ अपने कमरे में लौट आया। उसने मन में सोचा कि उसकी इच्छा की पूर्ति हो गई है।
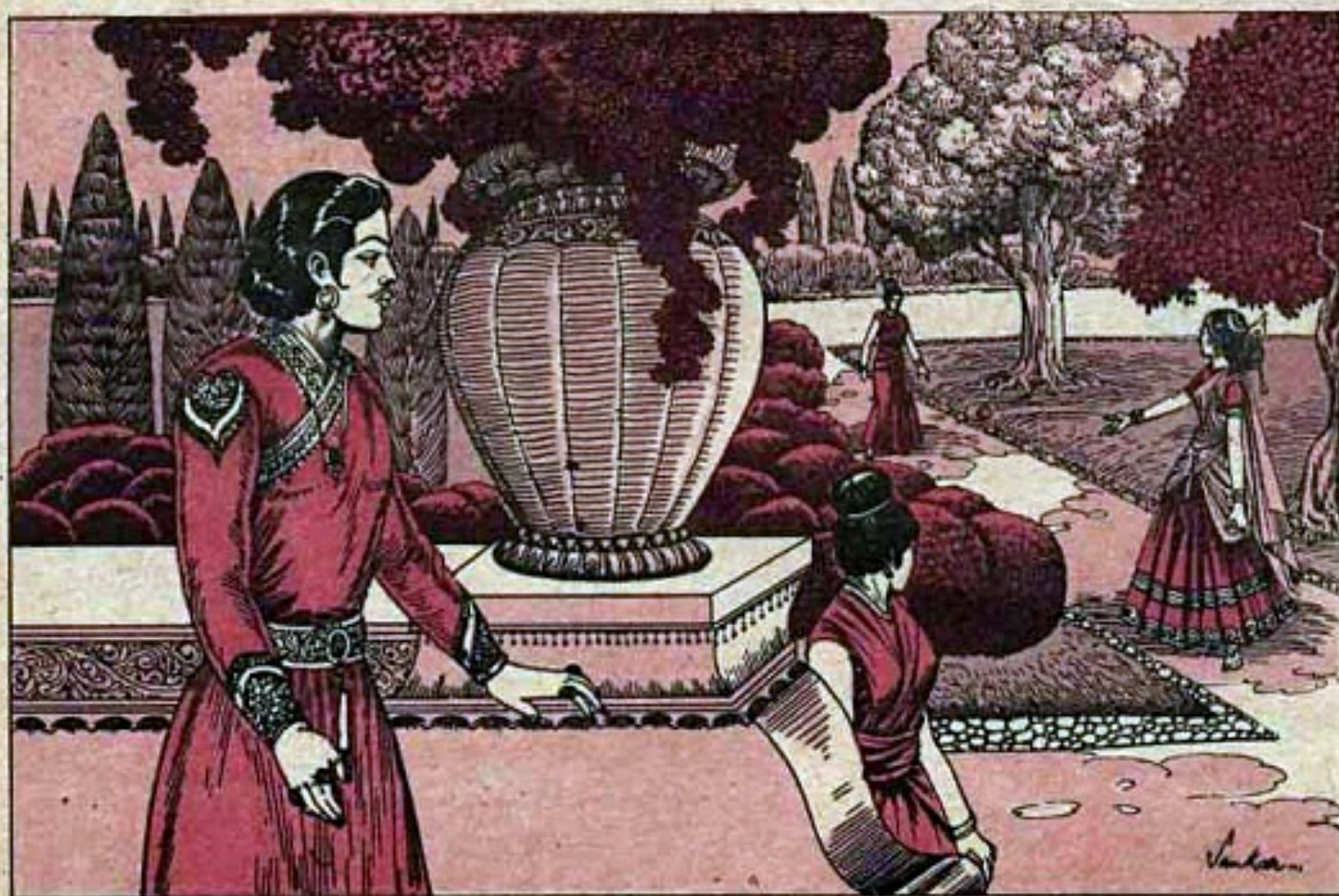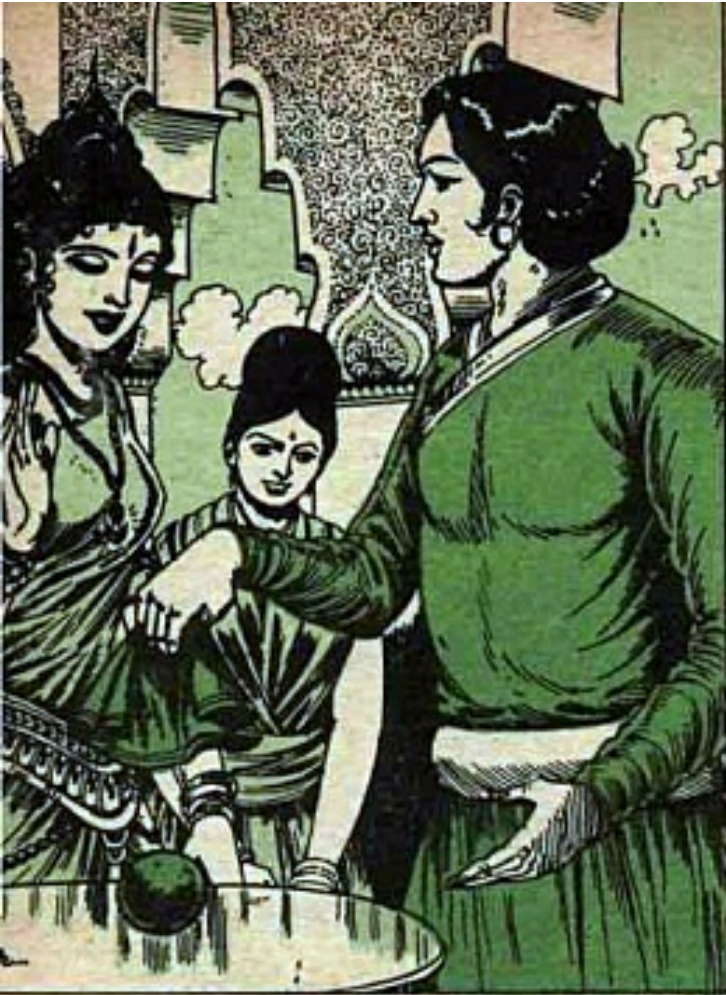
इसके बाद राजकुमारी से भेंट करने की बारी समुद्रसेन की थी। हिमानी के निकट पहुँचते ही समुद्रसेन ने अपनी जेब में से एक संतरा निकालकर मेज़ पर रख दिया। इसके बाद उसने दूसरी जेब में से एक रूमाल निकाला; संतरे को अपने हाथ में लेकर उस पर रूमाल ढक दिया। क्षण भर रुककर उसने रूमाल को निकाला; उसके हाथ में अमृतफल को देख हिमानी आश्चर्य में आ गई। तदनंतर समुद्रसेन ने हिमानी को अमृतफल भेंट में दिया। उसने बड़ी खुशी के साथ उस फल को स्वीकार किया।

"मैंने छोटा-सा इंद्रजाल किया है।" समुद्रसेन ने कहा।

हिमानी ने घोषणा की कि उसने समुद्रसेन को वर लिया है। वह घोषणा सुनकर हीरककुमार हताश हो गया। उसने समुद्रसेन से विदा लेकर अपने देश को लौटते हुए पूछा—"मैंने सुना है कि तुमने कोई इंद्रजाल करके संतरे को अमृतफल के रूप में बदल दिया है। यह तुमने कैसे किया है?"

"देख लो।" यह कहते समुद्रसेन ने एक संतरा हाथ में लेकर उसके छिलके को नीचे से ऊपर तक छे जगह चाकू से काट डाला। तब छिलके को आधा

निकालकर, भीतर की फांकों को निकाल दिया। भीतर के हिस्से को साफ़ किया। बाद संतरे के छिलके के भीतर एक अमृतफल को रख दिया और छिलके से उसे पूरा ढक दिया। अब वह देखने में संतरे जैसे लग रहा था। उसे अपने बायें हाथ में रखकर, दायें हाथ से उस पर रूमाल ढक दिया। रूमाल को निकालते वक़्त रूमाल के साथ संतरे के छिलके को भी निकाल दिया, फिर क्या था, उसके हाथ में अमृतफल बचा रहा।

"ओह! यही तुम्हारा इंद्रजाल है!" इन शब्दों के साथ हीरककुमार हँस पड़ा। तब अपने हंसों के विमान पर चला गया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा– "राजन, राजकुमारी हिमानी के बारे में तुम्हारा क्या विचार है? उसने पहले कहा था कि उसके साथ वरण करने आनेवालों की वह परीक्षा लेगी, लेकिन आखिर छोटा-सा इंद्रजाल करनेवाले के साथ उसने विवाह क्यों किया? इस संदेह का समाधान जानते हुए भी न दोगे तो तुम्हारा सिर टुकड़े-टुकड़े हो जायेगा।"

इस पर विक्रमार्क ने यों उत्तर दिया– "राजकुमारी की परीक्षा का पता चल ही रहा है! राजकुमारी का संतरे खाना, संतरे को अमृतफल के पेड़ की ओर फेंककर उसके नीचे विश्राम करना दोनों राजकुमारों ने देख लिया। मगर उसका भाव हीरककुमार ने नहीं समझा। समुद्रसेन ने ही जान लिया। उसका जीवन फिलहाल संतरे जैसे, सारविहीन द्रव जैसे है, उसकी इच्छा है कि उसका जीवन गूदे से भरे अमृतफल जैसे बदल जाय! समुद्रसेन यदि अमृतफल ही दे देता तब भी वह उसके साथ विवाह करती। मगर उसने अपने इंद्रजाल के द्वारा संतरे को अमृतफल के रूप में बदलकर उसके भाव की और पुष्टि की।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा।

लेखक: ए. सी. सरकार, जादूगर

सोने के कंगन

एक गाँव में महतो नामक एक किसान था। वह साठ साल का था। उसका पुत्र गोकुल था। महतो की बहू का नाम दुर्गा था। दुर्गा के बदरीनाथ नामक एक भाई था। ये सब एक ही परिवार में रहा करते थे।

महतो के हाथों में चार-पांच सौ रुपये क़ीमती सोने के कंगन थे। दुर्गा हमेशा ललचायी आँखों से कंगनों की ओर देखा करती थी। पर महतो का विचार था कि कंगनों के लोभ में पड़कर उसकी बहू बढ़ापे में उसे खाना खिलाएगी।

गोकुल भी इस विचार से इंतज़ार करता था कि महतो के मर जाने पर कंगनों से अपनी औरत के लिए सोने के गहने बनवाये जाय।

एक दिन महतो रोज़ की भाँति खेत में चला गया। खेत में एक आम के नीचे बैठकर किसी चिंता में डूबकर शाम तक वहीं रह गया। संध्या के होने पर उसे आँखें दीखती न थीं। इसलिए उसने एक बार चारों ओर नज़र डाली और अंधेरे के फैलते देख घबरा गया।

"अरे, पास में कोई है?" महतो इस विचार से चिल्ला पड़ा कि अगर वहाँ पर कोई हो तो उसको घर पहुँचा देगा।

खेत में थोड़ी दूर पर काम करनेवाले बदरीनाथ ने महतो की पुकार सुनी। उसने सारी हालत जान ली। उसके निकट जाकर हंसिये को उसके कंठ पर टिका कर अपना स्वर बदल कर गरज उठा–"पहले तुस कंगन उतार कर दे दो।"

लाचार होकर महतो ने अपने कंगन उतार कर बदरीनाथ के हाथ में रख दिया। कंगन लेकर बदरीनाथ वहाँ से

हरीश कुमार

चला गया। इसके बाद जैसे-तैसे महतो अपने घर पहुँचा।

महतो के हाथों से कंगन हड़प कर बदरीनाथ सीधे सुनार के घर पहुँचा और बोला–"भाई, तुम्हें आधा हिस्सा दूंगा। इन्हें बेच कर मुझे रुपये ला दो।" सुनार ने मान लिया।

बड़ी देर से महतो घर पहुँचा। पर अपने ससुर के हाथों में कंगन न देख दुर्गा ने पूछा–"तुम्हारे कंगन कहाँ?"

"तुम्हारे लिए गहने बनाने के वास्ते सुनार के हाथ दे दिया है।" महतो ने चालाकी से कहा।

दुर्गा यह बात सुनते ही बड़ी खुश हुई और उसने अपने लिए जो विशेष प्रकार के व्यंजन बना लिये थे, वे सब अपने ससुर को परोस दिया।

उधर सुनार आधी रात के वक़्त कोई काम कर रहा था, इसे देख उसकी पत्नी मीनाक्षी उठकर चली आई और पूछा–"आधी रात के वक़्त तुम क्या कर रहे हो?"

अपनी पत्नी को वहाँ देख सुनार घबरा गया। इस घबराहट में उसका हाथ जल गया। इसलिए वह खीझकर डांट बैठा–"तुम जाकर सो क्यों नहीं जाती?" इस पर मीनाक्षी को शक हुआ, फिर भी वह जाकर लेट जई।

महतो की बहू दुर्गा सवेरे ही उठकर सुनार के घर की ओर दौड़ पड़ी। उस वक़्त सुनार घर में न था।

"मेरे ससुर ने सोने के कंगन तोड़कर मेरे लिए गहने बनाने के लिए सुनार के हाथ दिया है। मुझे अमुक-अमुक गहने चाहिए। तुम्हारे पति के घर लौटते ही बतला दो कि तुरंत मेरे घर आकर मुझसे बात कर ले।" यों मीनाक्षी से कहकर दुर्गा अपने घर लौट आई।

सुनार के घर लौटते ही मीनाक्षी ने अपने पति को दुर्गा की कही हुई बातें सुनाईं। वह पहले आश्चर्य में आ गया, फिर संभल कर अपनी औरत को समझाते

हुए बोला—"वह माल उनका नहीं है। तुम चुप रह जाओ।"

दुर्गा ने घर लौटकर सबके सामने यह बात कह दी कि वह सुनार के घर हो आई है। उसकी बातें सुन महतो और बदरीनाथ भी अचरज में आ गये। मगर दोनों मौन रह गये।

इसके बाद मौक़ा देख बदरीनाथ सुनार के घर गया और कंगनों की बात उठाई। मगर सुनार अव्वल दर्जे का धूर्त था। इसलिए उसने बिगड़ कर कहा—"कैसे कंगन? तुमने तो मेरे हाथ कोई कंगन नहीं दिये। चाहे तो अदालत में जाकर शिकायत कर लो।" तब तक उसे यह मालूम हो गया कि वे कंगन महतो के ही हैं। यह बात सुनकर बदरीनाथ चकित रह गया। अपनी करनी पर पछताते हुए वह घर की ओर चल पड़ा।

महतो ने गुप्त रूप से अपने पुत्र से बताया कि पिछले दिन शाम को किसी ने ज़बर्दस्ती उसके कंगन हड़प लिया है, मगर उसकी आँखें दीखती न थीं, इसलिए वह उसे पहचान नहीं पाया।

यह बात सुनने के बाद गोकुल ने अपने साले बदरीनाथ को सुनार के घर जाते देख लिया था।

बदरीनाथ जब सुनार के घर जाकर सुनार से बातचीत कर रहा था; तब सुनार की पत्नी मीनाक्षी ने किवाड़ की ओट में से उनकी सारी बातचीत सुन ली और असली बात जान ली। इधर कई दिनों से सुनार मीनाक्षी को इस बात के लिए जब तब ताने दिये करता था कि उसके मायकेवालों ने मीनाक्षी के लिए कोई गहने बनाकर नहीं दिये हैं। वे ताने सुनकर वह बहुत दुखी हो जाया करती थी। अब उसके मन में यह विचार पैदा हो गया कि पिछली रात को उसके पति ने जो सोना गलाया था, उसे हड़प कर अपने मायकेवालों के हाथ दे और उससे गहने बनवा कर ले आये तो वह फिर कभी ताने न देगा।

यह सोचकर वह सोना हड़पने की ताक में थी। अपने पति के बाहर जाते ही मीनाक्षी ने सोना उठाकर अपनी नाभि में छिपा लिया।

दुपहर को सुनार घर लौटा तो सोना न पाकर अपनी पत्नी पर टूट पड़ा। मीनाक्षी ने क़सम खाई कि वह सोने की बाबत कुछ नहीं जानती।

सुनार ने बदरीनाथ को जो धोखा दिया था, उसका बदला लेने के वास्ते बदरीनाथ आधी रात के वक़्त सुनार के घर आया। घर के आंगन में स्थित पेड़ों में से एक के नीचे ताक लगाकर बैठ गया और सुनार का वध करने के लिए मौक़े का इंतज़ार करने लगा।

गोकुल के मन में इस बात का संदेह रह गया कि कंगनों की बाबत में सुनार तथा बदरीनाथ के बीच क़ोई गुप्त समझौता है। इसलिए वह बदरीनाथ की हर चाल पर निगरानी रखे हुए था। वह भी बदरीनाथ के पीछे चला आया और एक झाड़ी के पीछे छुपकर देखता रह गया कि बदरीनाथ क्या करनेवाला है।

घर में सोना गायब हो जाने से सुनार को संदेह हो गया कि यह सब उसकी पत्नी की ही करतूत होगी। इसलिए वह सोने का अभिनय करते हुए अपनी औरत पर नज़र डाले हुए था।

मीनाक्षी ने सोचा कि सोने को अपने पास रखना उचित नहीं है; वह एक लोटे
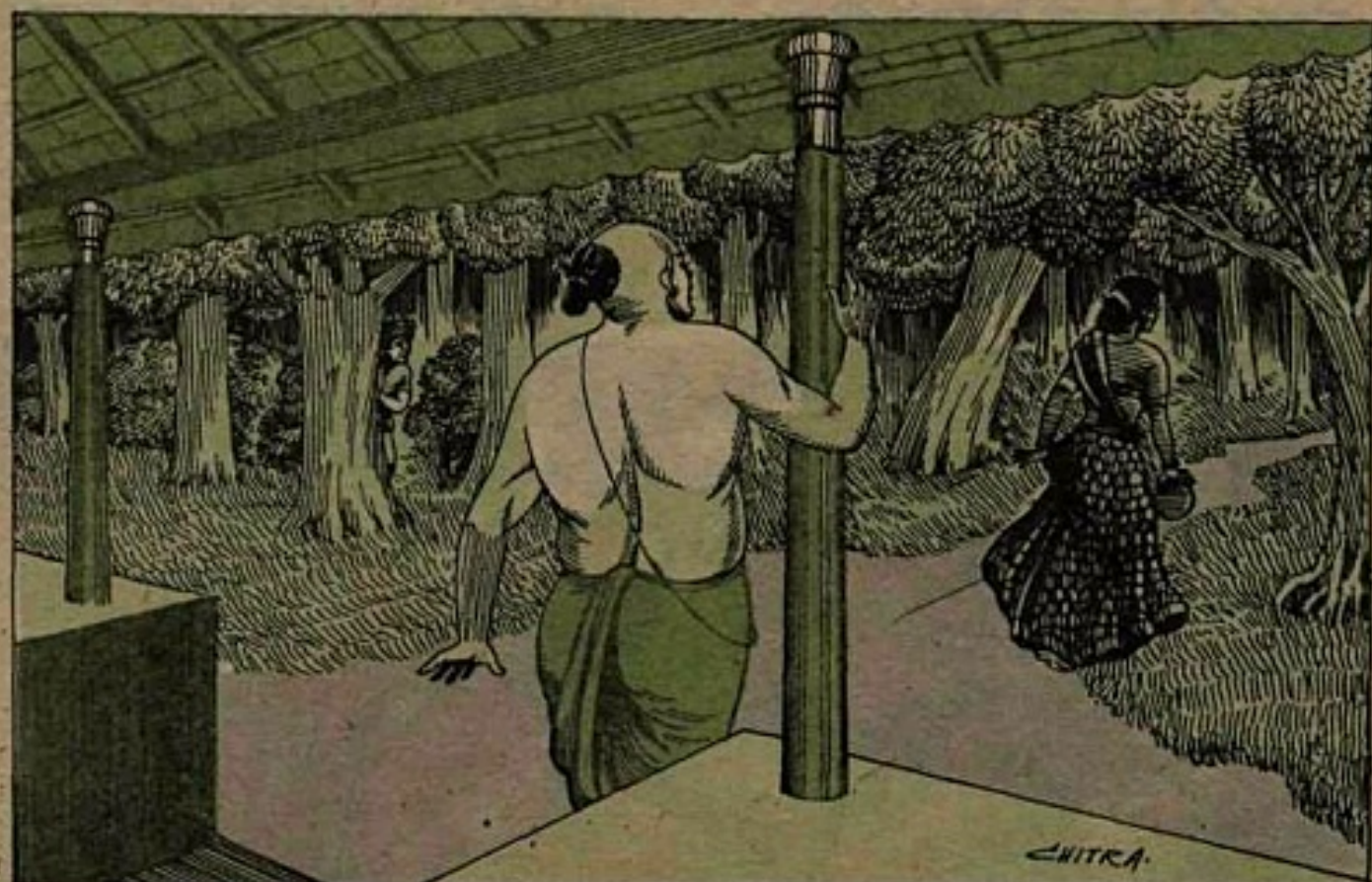
में पानी भरकर घर से बाहर आयी और जंगल की ओर चल पड़ी। सोने का अभिनय करनेवाला सुनार भी उसके पीछे हो लिया।

उन दोनों को घर से बाहर जाते देख बदरीनाथ की समझ में असली बात न आई। वह भी उनके पीछे चल पड़ा। बदरीनाथ के पीछे गोकुल भी चुपचाप चला गया।

ये चारों व्यक्ति अपने-अपने पीछे किसी को चलते देख न पाये। मीनाक्षी ने सोचा कि वह अकेली जा रही है। सुनार ने सोचा कि वह अकेले ही अपनी पत्नी का अनुसरण कर रहा है। इसी प्रकार बदरीनाथ अपने आगे जानेवाले दोनों को जानता था; किंतु अपने पीछे चललेवाले गोकुल की बात उसे मालूम न थी।

उन चारों व्यक्तियों को बिल्लियों की भांति दबे पाँव एक के पीछे एक को जाते देख बाहर चबूतरे पर लेटे सोने का अभिनय करनेवाले व्यक्ति ने देख लिया और गोकुल के पीछे किसी को न देख वह भी उसके पीछे हो लिया।

मीनाक्षी गाँव के बाहर एक उजड़े मंदिर के पास रुक गई, वहाँ पर एक छोटा सा गड्ढा खोद उसमें सोना छिपा दिया। ऊपर थोड़ी सी मिट्टी डाल घर की ओर चल पड़ी। इसके बाद बाक़ी तीनों झट उस गड्ढे पर झपट पड़े, और आपस में लड़ने लगे।

इतने में पीछे आये हुए व्यक्ति ने गरज कर कहा–"ठहर जाओ।"

तीनों ने मुड़कर देखा और समझ लिया कि चिल्लानेवाला व्यक्ति उस देश का राजा है। सब उसके पैरों पर गिर पड़े। राजा ने उन सबकी कहानी सुनी और सोना चुराने के अपराध में बदरीनाथ को तथा उसमें हाथ बंटाने व दगा देनेवाले सुनार को दण्ड दिया। तब महतो को उसका सोना वापस दिलाया। कुछ समय बाद दुर्गा ने उस सोने से अपने लिए गहने बनवा लिये।

बकवास

एक गांव में एक अमीर था। उसके गौरी नामक एक पुत्री थी। गौरी बड़ी सुंदर और तेज थी। उसमें सिर्फ़ एक ऐब यह थी कि वह पल भर भी बोले बिना रह नहीं सकती थी। उसकी मां ने कई बार उसे समझाया कि ज़्यादा बकवास करना अच्छा नहीं होता, पर यह बात गौरी के दिमाग में बैठती न थी। उसकी समझ में ज्यादा बात करना एक कला थी।

कुछ समय बाद गौरी की शादी हुई। वह अपने ससुराल गई। फिर भी उसे अपनी आदत बदलने की कोई ज़रूरत न पड़ी। क्यों कि उसके पड़ोस में उसकी आदत जैसी आदतवाली चार महिलाएँ और थीं। उनके पति भी राजा के दरबार में नौकरी करते थे। अपने पतियों के दरबार में जाते ही ये पाँचों औरतें एक जगह इकट्ठी हो गपशप किया करती थीं।

गौरी के पड़ोस में शारदा नामक एक युवती थी जो इन लोगों के साथ उठती-बैठती न थी। इसलिए वे पांचों युवतियाँ शारदा को हल्की नज़र से देखा करती थीं। उसके बारे में जब भी मौक़ा मिलता, खिल्ली उड़ाया करती थीं।

एक बार पांचों युवतियाँ एक जगह बैठकर बात करती थीं, तभी गौरी की आँखें चकरा गई और वह गिर पड़ी। बाक़ी चारों युवतियाँ घबरा गईं, उनकी समझ में न आया कि क्या किया जायँ, इसलिए वे चारों गली में आ गयीं। उस वक़्त उस गली से गुजरनेवाली शारदा ने उनके घबराये हुए चेहरों को देख भांप लिया कि कोई अनहोनी घटना हो गई है। उसने पता लगाया। असली बात जानकर शारदा गौरी के घर में चली गई, पानी मंगवा कर उसके चेहरे पर छिड़क दिया

सत्यनारायण मिश्र

और उसे होश में ले आई। गौरी की नाड़ी देख उसने मुस्कुराते हुए बताया– "तुम माँ बनने जा रही हो, जरा सावधान रहो!" यों कहकर वह चली गई।

शारदा की बात सच निकली। गौरी अपने मायके गई। एक पुत्र का जन्म दिया। कुछ दिन बाद अपने बच्चे को लेकर ससुराल चली आई। आते ही उसने अपने परिचितों को निमंत्रण देकर दावत दी। सब कोई न कोई भेंट ले आयीं। उन सब में शारदा की दी हुई भेंट ने गौरी को ज्यादा आकृष्ट किया। शारदा गौरी के बच्चे के लिए ऊनी कपड़े ले आई। यह जानकर गौरी को आश्चर्य हो गया कि शारदा ने स्वयं वे कपड़े तैयार किये हैं।

दूसरे दिन गौरी ने जब अपनी सहेलियों से यह बात कही तब सब ने यही कहा– "ऊनी कपड़े बनाना कौन बड़ी बात है? हम जो बुनती हैं, वे खरीदने वाले कपड़ों के समान नहीं होते! क़िफ़ायत करने के ख्याल से बहुत सारे काम शारदा खुद करती हैं। बेचारी करेगी क्या? हम लोगों जैसे वह संपन्न परिवार की नहीं है।"

गौरी ने यह बात समझ ली कि शारदा क़िफ़यती करती है। वह दूध दुहती है। कंड़े बनाती है, पिछवाड़े में तरकारी पैदा करती है। कभी-कभी तरकारियाँ ज्यादा हो तो गौरी जैसी अड़ोस-पड़ोस की महिलाओं को भी देती है। वह अपने पति के कुर्तों व अपनी चोलियाँ भी स्वयं सीती है। छोटी-मोटी बीमारियों का खुद इलाज तक कर लेती है।

उन्हीं दिनों में गौरी के पति ने उसके कान में यह रहस्य बता दिया कि राजा के ऊपर हत्या का प्रयत्न हुआ है। यह रहस्य केवल वही एक जानता है। इसलिए यह बात किसी से न कहे। अंत में उसने गौरी को सावधान भी किया कि यह बात गुप्त रखे।

मगर यह रहस्य गौरी के मुंह में दो दिन से ज्यादा छिपा नहीं रह पाया।

प्रतिक्रिया

एक गाँव में भुजंगराय नामक एक धनी था। वह महान दुष्ट था। उसी गाँव में भजनसिंह नामक एक किसान था। भजनसिंह को उसके पिता से दो एकड़ ज़मीन पैतृक संपत्ति के रूप में प्राप्त थी। भजनसिंह ने उस ज़मीन की खेतीबारी करते हुए एक छोटा-सा व्यापार भी करना चाहा। इसके लिए रुपयों की ज़रूरत थी, इसलिए उसने भुजंगराय के यहाँ जाकर क़र्ज मांगा। भुजंगराय ने भजनसिंह की ज़मीन गिरवी रखकर रुपये दिये।

भजनसिंह ने बड़ी मेहनत करके पेट काटकर उधार की आधी रक़म कमाई और भुजंगराय के पास जाकर क़र्ज में से आधे रुपये चुकाना चाहा। परंतु भुजंगराय ने न माना। उसने कहा कि उसका सारा क़र्ज एक ही दफे चुकाया जाय! लाचार होकर भजनसिंह वे रुपये लेकर घर लौट आया। बाक़ी रुपये भी जमा करने के लिए वह जी-जान से मेहनत करने लगा।

एक दिन भजनसिंह व्यापार के काम पर किसी गाँव में चला गया। उस वक़्त भजनसिंह के घर कोई गुरु अपनी पत्नी के साथ आ पहुँचा। भजनसिंह की पत्नी ने उनका उचित रूप में आदर-सत्कार किया। उन लोगों ने भजनसिंह के परिवार की सारी हालत बताई। इस पर भजनसिंह की पत्नी ने कहा–"महाराज! आप तो हमारी सारी तक़लीफ़ें जानते हैं! इसलिए इन तक़लीफ़ों से छुटकारा पाने का कोई उपाय हो तो बताइए।"

इस पर गुरु ने मान लिया। भजनसिंह की पत्नी की आँखों पर कोई पट्टी बांध दी और कोई मंत्र पढ़ा। बड़ी देर बाद गुरु ने उस पट्टी को खोलते हुए समझाया–

उमाकांत वर्मा

"रात के वक़्त चालीस दिन तक यह पट्टी बांधकर सो जाओगी तो तुम्हें जमीन में दबा खज़ाना दिखाई देगा।" यह कहकर वे दोनों चले गये।

इसके कई दिन बाद भजनसिंह ने भुजंगराय के क़र्ज की शेष रक़म भी जमा की। इसके पहले उसने जो रुपये कमा रखे थे, उनकी खोज करने पर दिखाई न दिये। तब क्रोध में आकर उसने अपनी पत्नी को डांटा। वह भी आश्चर्य में आ गई। घर में छिपाया धन कैसे गायब हो गया, किसी की समझ में न आया।

ठीक उसी समय भुजंगराय ने भजनसिंह पर दबाव डाला कि वह उसका पूरा क़र्ज चुकावे। यह भी कहने लगा कि ब्याज भी मूल धन के बराबर होता जा रहा है। भजनसिंह क़र्ज चुकाने की स्थिति में न था। उसने अपनी सारी हालत भुजंगराय को कह सुनाई।

इस पर भुजंगराय ने एक सलाह दी–"हम दोनों जुआ खेलेंगे। तुम जीतोगे तो तुम्हारा क़र्ज चुक जाएगा, हार गये तो तुम्हारे रुपये हाथ से निकल जायेंगे।"

भजनसिंह सबकी सलाह सुनने की स्थिति में था। उसने भुजंगराय की शर्त को मान लिया। दोनों ने जुआ खेला। भजनसिंह जुए में हार गया, जिससे उसका क़र्ज तो चुक नहीं गया, उल्टे अपने पास जो कुछ था, सब खो बैठा।

अब लाचार होकर भजनसिंह अपनी जमीन को भुजंगराय के हाथ सौंपकर आजीविका की खोज में पत्नी के साथ दूसरे गाँव में चला गया। उस वक़्त भजनसिंह को उसकी पत्नी ने गुरु का समाचार कह सुनाया। गुरु ने उसकी आँखों पर पट्टी बांध दी है। भजनसिंह को लगा कि उसी वक़्त उसके घर में चोरी हो गई होगी। भजनसिंह ने यह निर्णय कर लिया कि यह करनी भुजंगराय की ही होगी। मगर वह उस हालत में कुछ कर नहीं सकता था। भुजंगराय ने

तीसरे दिन गौरी ने यह रहस्य अपनी सहेलियों को सुनाकर कहा कि इसे दूसरों सामने प्रकट न करे। इसी शर्त पर उन औरतों ने कुछ और महिलाओं को यह रहस्य बताया। चार पांच दिनों के अंदर यह रहस्य सारे नगर में प्रकट हो गया।

पाँचवें दिन राज भटों ने गौरी के पति को बन्दी बनाकर कारागार में डाल दिया। गौरी दहाड़े मारकर रो पड़ी। पर इसका कोई फ़ायदा न रहा। उसका पति जब राजा के क्रोध का शिकार हो गया तब उसकी सहेलियां गौरी को देखने आने से डर गईं। मगर यह बात मालूम होते ही शारदा गौरी को देखने आई। उसने यह आश्वासन दिया कि उससे जो कुछ होगा, वह मदद करेगी।

शारदा ने घर लौटकर अपने पति को सारा समाचार सुनाया, साथ ही गौरी के पति को बचाने के लिए एक उपाय भी सुझाया। शारदा का पति राजा को देखने गया। राजा अपने रहस्य के प्रकट होने पर क्रोध में था और वह गौरी के पति को राजद्रोही मानकर उसे मृत्यु दण्ड या देश निकाला सजा सुनाने के विचार में था।

शारदा के पति को देखते ही राजा ने खीझकर पूछा—"बताओ, क्या बात है?"

"महाराज, मान लीजिए! एक चोर ने केवल धन के वास्ते ही किसी घर में चोरी की है। यदि उसकी चुराई गई थैली में सिर्फ़ रुपये हो तो वह साधारण चोर माना जाएगा। उसमें अगर गुप्त राजकीय पत्र भी हो तो वह राजद्रोही बन जाएगा। मगर सच्ची बात कैसे जान ली जाय?" शारदा के पति ने पूछा।

"यह बात तुम किसलिए पूछते हो?" राजा ने पूछा।

"आप जिस को राजद्रोही समझते हैं, वह सचमुच राजद्रोही नहीं है! उसने अपनी पत्नी पर विश्वास करके रहस्य प्रकट किया। वह ज्यादा बातूनी व

बकवास करने की आदत रखती है। इस कारण वह उस रहस्य को छिपा नहीं पाई।" शारदा के पति ने समझाया।

"ज्यादा बकवास करनेवाले भी रहस्य को गुप्त रख सकते हैं।" राजा ने कहा।

"आप यदि मुझे क्षमा करें तो मैं आप को एक सुझाव देना चाहूँगा। आप महारानी से कोई रहस्य बताकर जांच कर लीजिए। लेकिन यह बात प्रकट होने न दीजिएगा कि आप इसकी जांच कर रहे हैं। चार दिन प्रतीक्षा करके देख लीजिएगा।" शारदा के पति ने कहा।

राजा को उसकी बातें उचित ही मालूम हुईं। उसके कहे अनुसार किया। सब कोई जानते थे कि महारानी को भी ज्यादा बकवास करने की आदत है। राजा ने उसे जो रहस्य बताया वह गुप्त नहीं रह पाया।

इस पर राजा ने अपनी भूल पहचान ली और गौरी के पति को कारागार से मुक्त करते हुए उसे सचेत किया कि वह अपनी पत्नी के मामले में सतर्क रहे। अलावा इसके बकवास के कारण होनेवाले अनर्थों के बारे में शिलालेख लिखवा कर सारे देश में गड़वा दिया।

अपने पति के मुक्त होने के बाद गौरी ने शारदा के प्रति अनेक प्रकार से कृतज्ञता प्रकट की और पूछा–"तुमने मेरे प्रति कई उपकार किये, फिर भी हम तुम्हारे बारे में निंदात्मक रूप में बातें कहती रहीं, ऐसा क्यों?"

"इसका कारण ज्यादा बकवास करना ही है। आखिर बात करने के लिए कोई न कोई विषय चाहिए। यदि कोई विषय न मिला तो जानकार लोगों की निंदा में बातचीत करना शुरू कर देते हैं। इससे अकारण द्वेष बढ़ता है।" शारदा ने समझाया।

ये बातें सुनने पर गौरी में ज्ञानोदय हुआ। उसने जान लिया कि ज्यादा बात न करने के कारण ही शारदा अनेक विद्याओं में प्रवीण बन गई है। उस दिन से गौरी ने बकवास करना छोड़ शारदा के यहाँ अनेक विद्याएँ सीख लीं।

इस प्रकार की युक्तियों द्वारा अनेक किसानों के खेत हड़प लिये थे।

भजनसिंह जिस गाँव में पहुँचा, उसी गाँव में एक अमीर के यहाँ उसे नौकरी मिली। भजनसिंह के नौकरी में प्रवेश करने के थोड़े दिन बाद अमीर ने अपने खेत में कुआँ खुदवाना शुरू किया। इसके लिए मजदूरों के एक दल को तै किया। उस दल का मिस्त्री शंभुदास था। खुदाई की जगह भजनसिंह भी रहा करता था।

एक दिन कुएँ की खुदाई चल रही थी। अचानक शंभुदास ने खोदने का काम रोककर मजदूरों से कहा—"बस, आज के लिए काम बंद करो।" यह कहकर वह भी मजदूरों के साथ चला गया। यह सब भजनसिंह देख रहा था। उसने भांप लिया कि शंभुदास के खोदते समय कुदाल से कोई, चीज़ टकरा गई। उस आवाज़ पर मजदूरों ने ध्यान नहीं दिया।

अंधेरे के फैलते ही भजनसिंह एक भयंकर वेष बना कर कुएँ की खुदाई के निकट एक पेड़ की आड़ में छिप गया। भजनसिंह की शंका के मुताबिक़ थोड़ी देर बाद शंभुदास कुएँ के निकट आ पहुँचा। अचानक भजनसिंह भयंकर आकृति में शंभुदास के सामने आ पहुँचा जिससे शंभुदास डर के मारे कांप उठा।

"हे नर! तुम मेरा धन ले जाने के लिए आये हुए हो। मुझे बलि दिये बिना तुम इस धन को प्राप्त न कर सकोगे! तीन भेड़ और तीन मुर्गियाँ ले आओ।" भजनसिंह गरज उठा।

"ऐसा ही करूँगा, भगवन!" यों कहते शंभुदास वहाँ से दौड़ गया।

शंभुदास के आँखों से ओझल होते ही भजनसिंह ने अपना वेष बदल डाला। अपने मालिक के घर जाकर सारा समाचार कह सुनाया। तब उसे अपने साथ कुएं के पास ले आया। शंभुदास ने खोदते-खोदते जिस जगह रोक दिया था, उस जगह भजनसिंह ने खोदा तो एक हंड़ी

निकल आई। उस हंड़ी भर में सोना, चांदी, मणि और माणिक थे।

दोनों ने मिलकर बड़ी मुश्किल से उस हंड़ी को ऊपर निकाला और अमीर के घर पहुँचा दिया। अमीर ने कृतज्ञतापूर्वक भजनसिंह से कहा—"भजनसिंह! मांगो, तुम क्या चाहते हो?"

"मालिक! आपकी संपत्ति आपको मिल गई, पर मेरी संपत्ति को मेरे गाँव के भुजंगराय ने हड़प लिया है।" इन शब्दों के साथ भजनसिंह ने सारा वृत्तांत कह सुनाया।

अमीर ने थोड़ी देर तक सोचकर बताया—"हम दोनों मिलकर भुजंगराय के साथ इसकी प्रतिक्रिया करेंगे।"

इसके कुछ दिन बाद भुजंगराय के गाँव में उसी गली में एक धनी आ पहुँचा। उसने एक महल किराये पर ले लिया। एक दिन उस धनी के नौकर ने भुजंगराय के यहाँ जाकर चार सोने की मुहरों के छुट्टे पैसे मांगे।

उन मुहरों को देखते ही भुजंगराय की आँखें चौंधिया गयीं। उसने उस नौकर से पूछा—"अबे, ये मुहरें तुम्हें कहाँ से मिलीं?"

"साहब, ये हमारे मालिक की हैं। उन्हें छुट्टे पैसे चाहिए!" नौकर ने जवाब दिया। इसके बाद नौकर ने गुप्त रूप से भुजंगराय से बताया कि उसके मालिक के पास ऐसी मुहरें अनेक हैं।

यह खबर सुनते ही भुजंगराय के मन में उस धनी के साथ दोस्ती करने की इच्छा पैदा हुई। उसने धनी के साथ अपना परिचय कर लिया और मैत्रीपूर्वक उसके द्वारा अनेक समाचारों का संग्रह किया। उसने यह जान लिया कि उस धनी के पास जो कुछ धन है, वह उसका निजी धन नहीं है।

"यह एक अद्भुत रहस्य है। मेरे पिताजी राजदरबार के शिल्पी हैं। उन्होंने राजा के खजाने का एक गुप्त द्वार जान

लिया है और मुझे उसका पता दिया है। मैं उसमें से थोड़ा धन लेकर यहाँ पर आ गया हूँ।" धनी ने भुजंगराय से बताया।

"आप वहीं पर क्यों नहीं रहे?" भुजंगराय ने अमीर से पूछा।

"मैं अगर वहीं पर रह जाता तो बार-बार खजाने से धन लाने की लालच पैदा हो जाती। लालच सभी दुखों का मूल है। मैं कभी न कभी पकड़ा जाता। इस धन से मैं यहाँ पर एक कारखाना स्थापित कर आराम से जीना चाहता हूँ।" इन शब्दों के साथ धनी ने अपने साथ लाये सारा धन भुजंगराय को दिखाया। उसे देखने पर धनी की बातों पर भुजंगराय के मन में गहरा विश्वास पैदा हो गया। ऐसा खजाना राजा-महाराजाओं के पास छोड़ और कहीं रह भी नहीं सकता।

भुजंगराय ने धनी के साथ अपनी दोस्ती और बढ़ा ली। एक दिन उसने धनी से पूछा–"राजा के खजाने से मुझे भी एक बार धन लाने का मौक़ा क्यों नहीं दिलाते?"

"ओह, क्या बताऊँ! इसके लिए तो कई अड़चने हैं। अलावा इसके मैं अपने पिताजी को कैसे समझा सकता हूँ? आप एक काम क्यों नहीं करते? हम लोग यहाँ पर एक चीनी फैक्टरी स्थापित करना चाहते हैं। इसके लिए सौ एकड़ की गन्ने की खेती चाहिए। आप हमारे नाम एक सौ एकड़ ज़मीन लिखवाकर दे तो मैं अपने पिता को मनवा कर आपको वह रहस्य बता सकता हूँ।" धनी ने समझाया।

"अच्छी बात है! आजकल कौन मुफ़्त में कोई सहायता करते हैं?" यों कहकर भुजंगराय ने दूसरे दिन धनी के नाम सौ एकड़ जमीन लिखकर उस संबंधी क़ाग़जात सौंप दिया। दोनों एक कमरे में पहुँचकर गुप्त रूप से बातचीत करने लगे। भुजंगराय

के द्वारा दिये गये क़ाग़जातों को धनी ध्यान से देख रहा था।

उस वक़्त अचानक वहाँ पर एक सरकारी अफ़सर आ धमका। उसको देखते ही धनी ने उन क़ागज़ातों को झट अपनी जेब में छिपा लिये।

इस पर उस अधिकारी ने धनी से कहा–"तुम्हारा रहस्य प्रकट हो गया है। चलो राजा के पास। तुम्हें राजा फांसी के तख़्ते पर चढ़ाने जा रहे हैं!" फिर घबराये हुए भुजंगराय को देख बोला–"यह कौन है? यह भी इसमें शामिल है क्या? इसको भी तुम अपने साथ ले आओ।"

"बेचारा! वह कुछ नहीं जानते। मुझसे मिलने के लिए आये हुए बुजुर्ग हैं।"

इन शब्दों के साथ धनी उस अफ़सर से कुछ कह ही रहा था, तभी भुजंगराय वहाँ से चुपके से खिसक गया।

दूसरे दिन भुजंगराय ने देखा कि उसके नाम अपने खेत बेचनेवाले सभी किसान पहले की भांति अपने अपने खेत जोत रहे हैं। भुजंगराय ने उन लोगों से पूछा–"अबे, यह तुम लोगों की ज़बर्दस्ती कैसी? मेरे कर्ज चुकाये बिना तुम लोग खेत कैसे जोत रहे हो?"

इस पर सबने एक स्वर में कहा–"तुम पहले यहाँ से चले जाओ। वरना तुम्हारी इज्जत धूल में मिल जाएगी। उल्टे पछताओगे।"

भुजंगराय चकित हो सोचने लगा कि उसने सौ एकड़ ज़मीन धनी के नाम जो लिख दी, यह बात इन सबको कैसे मालूम हो गई। तब भजनसिंह ने आगे आकर एक पत्र को दिखाते हुए कहा–"क्या तुम्हें याद नहीं? हमारे खेतों पर तुम्हारा जो हक़ है, उसे इस पत्र के साथ तुमने त्याग दिया है।"

इस प्रकार भजनसिंह ने अपने मालिक धनी की मदद से यह नाटक रचकर अपने खेत को ही नहीं, बल्कि गाँव के अन्य किसानों के खेतों को वापस दिलवा दिया।

योगी - कर्मयोगी

एक किसान रात के वक़्त खेत से लौट रहा था। उसने पेड़ के नीचे बैठ कर तपस्या करनेवाले एक योगी के पैर पर भूल से पाँव रखा। उसके पैर के नाखून के लगने से योगी के पैर पर घाव हो गया।

योगी ने क्रोध में आँखें खोल कर शाप दिया—"अरे पापी! मुझे घायल बनाने वाले तुम्हारे दोनों पैर बेकार हो जाय!" मगर उस शाप का प्रभाव किसान पर न पड़ा। किसान योगी से क्षमा याचना कर सीधे घर चला गया।

अपनी तपस्या के बेकार होते देख योगी ने सांस बंद करके आत्महत्या करनी चाही।

तब पेड़ के आश्रय में रहने वाली देवी ने प्रत्यक्ष हो उसको रोकते हुए पूछा—"तुम तपस्या किस लिए करते हो?"

"अपनी मुक्ति के वास्ते!" योगी ने उत्तर दिया।

"अरे मूर्ख! तुम अपने हित के वास्ते तप कर रहे हो! वह किसान अपने परिवार के वास्ते श्रम कर रहा है। तुम यदि योगी हो तो वह कर्मयोगी है! वह दूसरों के हित के वास्ते जीता है। तुम्हारे शाप का प्रभाव उस पर न पड़ेगा!" वृक्ष-देवी ने कहा।

इस पर योगी में ज्ञानोदय हुआ।

भाग्य का खेल

एक जमाने गें वेंकटापुर नामक गाँव में शेषाचार्य नामक एक कवि था। एक बार वह किसी दूर के गाँव में गया, अपना काम समाप्त होते ही लौट पड़ा। इस बार यात्रा के लिए नीलकंठ नामक एक गाड़ी वाले से पांच रुपये के किराये पर गाड़ी तै की।

रास्ते में नीलकंठ ने शेषाचार्य से पूछा–"महाशय! क्या आप वेंकटापुर के निवासी तो नहीं हैं?"

शेषाचार्य किसी विचार में डूबे हुए था। उसने सिर उठाकर कहा–"वैसे हम सिद्धापुर के हैं, परंतु मेरे पिताजी के जमाने में वेंकटापुर चले आये हैं।"

"क्या आपके पूर्वज सिद्धापुर के ही हैं?" नीलकंठ ने आश्चर्य में आकर पूछा।

"अरे, यह बात सुनने पर तुम आश्चर्य क्यों करते हो? क्या उस गाँव में तुम्हारे कोई रिश्तेदार हैं?" शेषाचार्य फिर ने पूछा।

नीलकंठ ने अपनी व्यथा को दबाते हुए उत्तर दिया–"हाँ, एक जमाने में थे, वे भी जीविका की खोज में जहाँ-तहाँ चले गये हैं। हाँ, यह बताइए, आप क्या किया करते हैं?"

"मैं कविता करता हूँ। दो-चार काव्य भी मैंने लिखे हैं।" शेषाचार्य ने कहा।

नीलकंठ प्रसन्न होकर बोला–"ओह, आप कवि हैं! बताते क्यों नहीं? मैं कवियों के प्रति आदरभाव रखता हूँ। आप जैसे कवि को अपनी गाड़ी में ले जाते हुए मुझे गर्व हो रहा है! क्या आपके बाप-दादा भी कवि थे?"

गाड़ीवाले की बातों पर शेषाचार्य हंसकर बोला–"हाँ, उनके जमाने में कविता

महावीर प्रसाद

का उफ़ान उमड़ पड़ा था। उसका थोड़ा प्रभाव मुझ पर भी पड़ा, इसलिए मैं भी कवि बन गया!"

नीलकंठ ने थोड़ी देर सोच कर कहा– "आप बुरा न माने तो मैं आप से एक बात पूछना चाहता हूँ। क्या यह कविता आपको खाना देती है?"

शेषाचार्य को नीलकंठ का प्रश्न अक़्लमंदी का लगा। उसने कहा–"आज कवियों को आश्रय देनेवाले राजा, कविता का आदर करनेवाले महानुभाव कौन हैं? मेरे दादा गोवर्द्धनाचार्य सिद्धापुर के दरबार के प्रसिद्ध कवि थे। राजा रघुपतिराव ने मेरे दादा की कविता के माधुर्य पर मुग्ध हो उनका कनकाभिषेक किया और उन्हें एक लाख मुद्राएँ भेंट की थीं। उस समय मैं छोटा-सा बालक था।"

नीलकंठ मौन हो गाड़ी चलाने में मग्न हो गया। दुपहर हो गई। बीच रास्ते में शेषाचार्य ने गाढ़ीवाले से कहा–"देखो नीलकंठ, थोड़ी देर के लिए तुम गाड़ी रोक दो, तो मैं दूर पर दीखनेवाले उस गाँव में जाकर अपनी प्यास बुझाये लौट आऊँगा।"

नीलकंठ ने गाड़ी रोककर कहा–"आप गाड़ी पर ही रह जाइए। मैं खुद जाकर उचित प्रबंध करूँगा।" यों कहते वह खेतों में दौड़ पड़ा। थोड़ी देर में एक ब्राह्मण बालक के हाथ एक बड़े लोटे में मट्ठा लिवाकर आ पहुँचा।

शेषाचार्य ने मट्ठा पीकर ब्राह्मण बालक को भेज दिया, तब कहा—"नीलकंठ, तुम बड़े ही उदार हृदयवाले हो?"

"यह कौन बड़ा काम किया मैंने?" यों कहते नीलकंठ ने गाड़ी हांक दी। शाम तक गाड़ी वेंकटापुर में पहुँची। शेषाचार्य घर के भीतर चला गया और अपने नौकर के द्वारा गाड़ी का किराया पाँच रुपये भेजा।

नीलकंठ गाड़ी को हांककर जाते हुए नौकर से बोला—"आचार्यजी से कह दो, मैंने रुपये लेने से मना कर दिया है।" नौकर ने आकर यह बात शेषाचार्य से कह दी, तब शेषाचार्य आश्चर्य चकित हो बाहर आया। देखता क्या है, गाड़ी तब तक काफ़ी दूर निकल गई है। शेषाचार्य ने तालियाँ बजाकर गाड़ी रोक दी, नीलकंठ के मना करते रहने पर भी किराया देने को हुआ।

नीलकंठ ने शेषाचार्य से कहा—"आप ही बताइए, एक को दान दी हुई वस्तु को फिर वापस ले सकते हैं क्या?"

शेषाचार्य की समझ में बात न आई। उसने पूछा—"साफ़-साफ़ बतला दो, तुम्हारे मन में क्या बात है?"

"आप मुझे जो किराया देते हैं, वह राजा रघुपतिराव के द्वारा आपके दादा को दिया गया दान तो नहीं?" नीलकंठ ने पूछा।

"यह बात सत्य है! मैं कैसे इनकार कर सकता हूँ?" शेषाचार्य ने कहा।

"राजा रघुपतिराव मेरे दादा हैं। लेकिन मैं आपका कनकाभिषेक नहीं, कम से कम आपको काश्मीरी शाल देने की स्थिति में भी नहीं हूँ। मगर आपको मैं अपनी गाड़ी में ले आया, इस बात से मैं फूला नहीं समाता हूँ। आप क्षमा कीजिए, मैं आप से एक फूटी कौड़ी भी नहीं ले सकता।" यों कहते नीलकंठ गाड़ी हांककर चला गया। शेषाचार्य चकित हो गाड़ी की ओर देखते खड़ा ही रह गया!

का उफ़ान उमड़ पड़ा था। उसका थोड़ा प्रभाव मुझ पर भी पड़ा, इसलिए मैं भी कवि बन गया!"

नीलकंठ ने थोड़ी देर सोच कर कहा– "आप बुरा न माने तो मैं आप से एक बात पूछना चाहता हूँ। क्या यह कविता आपको खाना देती है?"

शेषाचार्य को नीलकंठ का प्रश्न अक़्लमंदी का लगा। उसने कहा–"आज कवियों को आश्रय देनेवाले राजा, कविता का आदर करनेवाले महानुभाव कौन हैं? मेरे दादा गोवर्द्धनाचार्य सिद्धापुर के दरबार के प्रसिद्ध कवि थे। राजा रघुपतिराव ने मेरे दादा की कविता के माधुर्य पर मुग्ध हो उनका कनकाभिषेक किया और उन्हें एक लाख मुद्राएँ भेंट की थीं। उस समय मैं छोटा-सा बालक था।"

नीलकंठ मौन हो गाड़ी चलाने में मग्न हो गया। दुपहर हो गई। बीच रास्ते में शेषाचार्य ने गाढ़ीवाले से कहा–"देखो नीलकंठ, थोड़ी देर के लिए तुम गाड़ी रोक दो, तो मैं दूर पर दीखनेवाले उस गाँव में जाकर अपनी प्यास बुझाये लौट आऊँगा।"

नीलकंठ ने गाड़ी रोककर कहा–"आप गाड़ी पर ही रह जाइए। मैं खुद जाकर उचित प्रबंध करूँगा।" यों कहते वह खेतों में दौड़ पड़ा। थोड़ी देर में एक ब्राह्मण बालक के हाथ एक बड़े लोटे में मट्ठा लिवाकर आ पहुँचा।

शेषाचार्य ने मट्ठा पीकर ब्राह्मण बालक को भेज दिया, तब कहा–"नीलकंठ, तुम बड़े ही उदार हृदयवाले हो?"

"यह कौन बड़ा काम किया मैंने?" यों कहते नीलकंठ ने गाड़ी हांक दी। शाम तक गाड़ी वेंकटापुर में पहुँची। शेषाचार्य घर के भीतर चला गया और अपने नौकर के द्वारा गाड़ी का किराया पांच रुपये भेजा।

नीलकंठ गाड़ी को हांककर जाते हुए नौकर से बोला–"आचार्यजी से कह दो, मैंने रुपये लेने से मना कर दिया है।" नौकर ने आकर यह बात शेषाचार्य से कह दी, तब शेषाचार्य आश्चर्य चकित हो बाहर आया। देखता क्या है, गाड़ी तब तक काफ़ी दूर निकल गई है। शेषाचार्य ने तालियाँ बजाकर गाड़ी रोक दी, नीलकंठ के मना करते रहने पर भी किराया देने को हुआ।

नीलकंठ ने शेषाचार्य से कहा–"आप ही बताइए, एक को दान दी हुई वस्तु को फिर वापस ले सकते हैं क्या?"

शेषाचार्य की समझ में बात न आई। उसने पूछा–"साफ़-साफ़ बतला दो, तुम्हारे मन में क्या बात है?"

"आप मुझे जो किराया देते हैं, वह राजा रघुपतिराव के द्वारा आपके दादा को दिया गया दान तो नहीं?" नीलकंठ ने पूछा।

"यह बात सत्य है! मैं कैसे इनकार कर सकता हूँ?" शेषाचार्य ने कहा।

"राजा रघुपतिराव मेरे दादा हैं। लेकिन मैं आपका कनकाभिषेक नहीं, कम से कम आपको काश्मीरी शाल देने की स्थिति में भी नहीं हूँ। मगर आपको मैं अपनी गाड़ी में ले आया, इस बात से मैं फूला नहीं समाता हूँ। आप क्षमा कीजिए, मैं आप से एक फूटी कौड़ी भी नहीं ले सकता।" यों कहते नीलकंठ गाड़ी हांककर चला गया। शेषाचार्य चकित हो गाड़ी की ओर देखते खड़ा ही रह गया!

जादू का नींबू

प्राचीनकाल में एक नगर में रामनाथ नामक एक वैद्य था। वह रोगों का निदान करने में प्रसिद्ध था। उसने काफी संपत्ति अर्जित की। उसका पुत्र शंभुनाथ था। उसने भी अपने पिता से वैद्यवृत्ति सीखकर युक्त अवस्था में विवाह भी कर लिया।

रामनाथ जब वृद्ध हुआ, तब अपने पुत्र, पुत्रवधू, पोते-पोतियों को सुखी देख बहुत समय तक जिंदा रहा, आखिर उसकी इहलीला समाप्त हुई। रामनाथ की मृत्यु के बाद शंभुनाथ ने रोगों की चिकित्सा करना शुरू किया। लेकिन न मालूम किसी कारण से लोग उसके यहाँ इलाज कराने न आते थे। धीरे धीरे आनेवाले रोगियों की संख्या भी घटती गई।

शंभुनाथ ने बहुत-कुछ सोचा, पर इसका कारण उसकी समझ में न आया। आखिर यही सोचकर चुप रहा कि उसके पिता के प्रति रोगियों में जो श्रद्धा का भाव है, वह उसके प्रति नहीं है। परंतु धीरे धीरे उसे अपने परिवार के लोगों का पेट पालना भी मुश्किल हो गया। उसके पिता द्वारा अर्जित संपत्ति घटती गई। दूसरा काम करना भी चाहे तो वह सिवाय वैद्यवृत्ति के कुछ जानता न था।

एक दिन शंभुनाथ भोजन कर रहा था। उसकी पत्नी पंखा झलते बोली–"सुनते हैं कि गाँव के छोर पर पहाड़ी गुफ़ा में कोई स्वामीजी पधारे हैं। वे भभूत का मंत्र जापकर सबकी बीमारियों का इलाज कर रहे हैं।"

यह बात सुनकर शंभुदास अचरज में आ गया। उसे इस बात का विश्वास न हुआ कि भभूत के द्वारा बीमारियाँ दूर हो सकती हैं। इसलिए वह भी उस दिन

प्रेमकुमार गुप्ता

शाम को लोगों के साथ मिलकर स्वामीजी को देखने गुफ़ा में चला गया।

गुफ़ा में स्वामीजी बैठे थे। वे गेरुए वस्त्र धारण किये हुए थे, उनके मुंह पर भभूत मला हुआ था। उनके हाथ में रुद्राक्षमाला तथा बाजू में कमण्डलु था। लोगों की भीड़ उन्हें घेरे हुए थी। वे सब में भभूत बांट रहे थे। भभूत लेकर लोग स्वामीजी को खाने के पदार्थ, फल और वस्त्र समर्पित कर चले जा रहे थे।

यह दृश्य देख शंभुनाथ घर लौट आया। उस दिन से शंभुनाथ में कोई परिवर्तन आये उसकी पत्नी ने भांप लिया। वह रोज सवेरे स्नान करता; आदि पराशक्ति के सामने बैठकर, अपने सामने फूल व नींबू रखकर घंटों पूजा करता। उसकी पत्नी लोगों के काम में मदद देकर परिवार जैसे-तैसे चला लेती थी।

एक दिन शंभुनाथ पूजा में निमग्न था। बाहर किसी को जोर-शोर से रोते सुनाई दिया। उसने बाहर आकर देखा। एक मां अपने बच्चे को कंधे पर डाल रोते हुए उस रास्ते जा रही थी। शंभुनाथ ने उसको रोककर पूछा–"बहन, क्या हो गया तुम्हें?"

"मैं क्या बताऊं, मेरा बेटा बेहोश होकर गिर पड़ा है। मैं इसको स्वामीजी के पास ले जा रही हूं; लेकिन मेरा संदेह है कि तब तक यह जिंदा रहेगा या नहीं।" यों कहते वह रो पड़ी।

शंभुनाथ उस औरत को भीतर ले गया। अपने पूजा-मंदिर में ले जाकर देवीजी को प्रणाम किया; एक नींबू निकालकर मंत्र जापा, उसे काटकर उसके रस को एक गिलास में निछोड़ दिया। उसमें थोड़ा नमक मिलाकर एक तरफ़ रख दिया, बच्चे के मुँह पर पानी छिड़ककर उसे होश में लाया, तब उस लड़के को वह रस पिलाया।

आधा घंटे बाद लड़का बिलकुल स्वस्थ हो गया। लड़के की माँ ने शंभुनाथ के पैरों पर गिरकर प्रणाम किया और अपनी कृतज्ञता प्रकट की।

"मुझे नहीं, देवीजी को तुम प्रणाम करो।" शंभुनाथ ने कहा।

उस औरत ने देवीजी को प्रणाम किया और लड़के को लेकर चली गई। उसने शंभुनाथ की महिमा के बारे में अपने गाँव में खूब प्रचार किया। तब से लेकर शंभुनाथ के यहाँ रोगी आने लगे। जो कोई किसी भी बीमारी को लेकर आता, उसे शंभुनाथ मंत्र जापकर नींबू देता और उसके उपयोग की विधि बतला देता। वह किसी भी रोगी से कुछ मांगता न था, जो भी देते, उसे स्वीकार कर लेता।

धीरे-धीरे शंभुनाथ के घर पर रोगियों की भीड़ लगने लगी। शंभुनाथ के दिन आराम से बीतने लगे। उसकी पत्नी व बच्चे अच्छे अच्छे वस्त्र पहनते और पुष्टिवर्द्धक आहार लेकर हमेशा प्रसन्न रहने लगे।
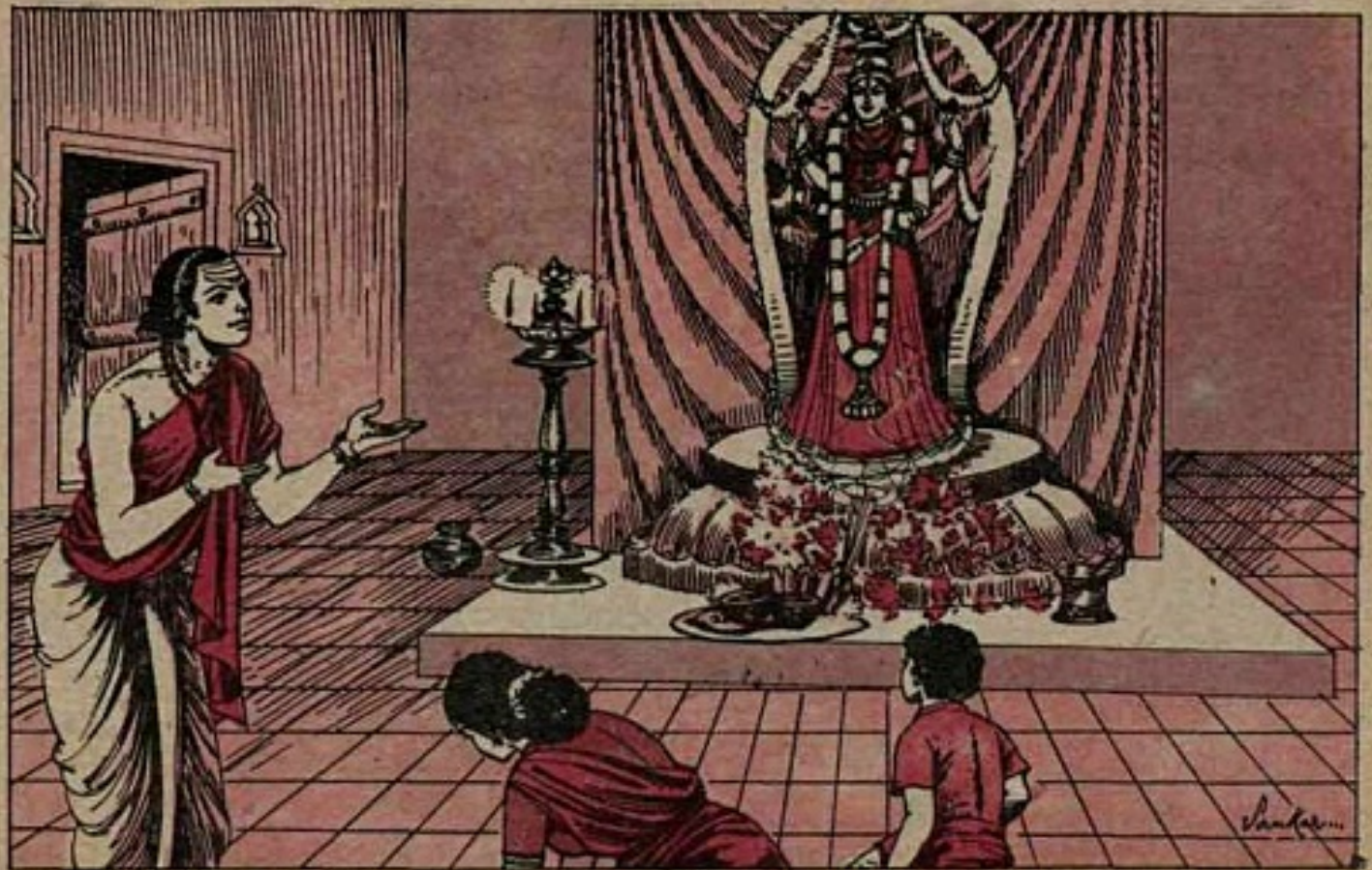
एक दिन शंभुनाथ के आखिरी लड़के की आँख पर फ़ोड़े निकल आयें। उसकी पत्नी ने बच्चे को शंभुनाथ को दिखाया।

"टोकरी में से दो नींबू निकालकर उनका रस पानी में घोल दो और लड़के को उस पानी से नहला दो। दस दिनों के अंदर सभी फोड़े ठीक हो जायेंगे।" शंभुनाथ ने अपनी पत्नी को समझाया।

पत्नी ने आश्चर्य में आकर पूछा–"क्या नींबू देवीजी के सामने नैवेद्य रखकर मंत्र जापने की ज़रूरत नहीं है?"

इस पर शंभुनाथ ने हँसकर यों उत्तर दिया–"पगली! मैं मंत्र कहाँ जानता हूँ? मेरे पिताजी ने अपनी ज़िंदगी भर नींबू का ही इलाज़ किया है। नींबू समस्त प्रकार के रोगों को दूर करनेवाला है। अनुपान बदलकर उसके द्वारा सभी बीमारियों को दूर किया जा सकता है। मेरे पिताजी इसी प्रकार के इलाज़ करने में प्रवीण थे। उन्होंने मुझे यही इलाज़ सिखाया है। लेकिन लोगों का स्वामीजी पर विश्वास जम गया और इलाज़ के प्रति उनका विश्वास जाता रहा। मैं जानता था कि स्वामीजी के भभूत के प्रति लोगों का विश्वास ज्यादा दिन तक जमा नहीं रहेगा। इसीलिए लोगों का मेरे प्रति विश्वास जमाने के लिए ही मैंने यह नाटक रचा है। लेकिन मैंने सच्चा इलाज़ किया है, इसलिए लोगों का विश्वास मेरे प्रति सदा के लिए बना रहेगा।"

शंभुनाथ की पत्नी ने असली बात समझ ली। उसे इस बात का स्मरण हो आया कि उसका ससुर पिछवाड़े में बड़ी लगन के साथ नींबू के पेड़ पालता था और नींबू के रस से कोई दवाएँ तैयार किया करता था।

तब उसने अपने पति के कहे मुताबिक़ नींबू के रस से मिले पानी से लड़के को नहलाया और उसके फोड़ों का इलाज़ हो गया।

ईमानदारी

खलीफ़ा हारून अल रशीद के बाद बग्दाद का शासन करने वालों में अब्दुल अजीज प्रमुख है। वह स्वभाव से अच्छा व्यक्ति है; उसके दण्ड भी विचित्र होते थे। लोग जो अपराध करते, उसे लोगों के द्वारा स्वीकार करवा देता और बड़ी चालाकी से फ़ैसला सुनाता था। इससे अपराधी अपनी गलती पर पछताता और ज़िंदगी भर फिर कभी कोई अपराध करता न था। उसकी खूबी यह थी कि जो ईमानदारी का परिचय देते, उन्हें उचित पुरस्कार भी दिया करता था। उनका सत्कार भी करता था। इसलिए उसके जमाने में चोरी-डकैती या अन्य प्रकार के अपराध बहुत कम होते थे।

एक बार अब्दुल अजीज के बहुत समय बाद एक लड़का पैदा हुआ। इसलिए प्रसन्न होकर अजीज ने गरीबों में दिल खोलकर दान किये। इस प्रकार दान लेने वालों में से एक गरीब ने एक बोरा अनाज ले जाकर घर में उसे खोलकर देखा। अनाज के भीतर उसे एक सोने का सिक्का मिला। उसी वक़्त उसकी पत्नी ने उस सिक्के को देख पूछा—"यह सोने का सिक्का कहाँ से मिला?"

उसने सारी घटना सुना कर कहा कि वह उस सिक्के को खलीफ़ा के हाथ सौंपना चाहता है। पत्नी ने उसकी अवहेलना करते कहा—"तुम भी कैसे बेवकूफ हो! तुम्हारी अक़्ल चरने तो नहीं गई? भाग्य से जो सिक्का हमारे हाथ लगा है, क्या उसे तुम खलीफ़ा को सौंप दोगे?"

"तुम चुप रह जाओ। भूल से वह सिक्का हमारे बोरे में आ गया है। उसे दबाकर रखना उचित नहीं है। जो लोग ईमानदार रहते हैं, उनके प्रति हमेशा

प्रतिभा जोशी

न्याय होता है।" गरीब ने समझाया। पत्नी के मना करते रहने पर भी उसने उसकी एक न सुनी और उस सोने के सिक्के को ले जाकर खलीफ़ा के हाथ सौंप दिया। अब्दुल अजीज ने उस गरीब युवक की ईमानदारी पर खुश हो उसे सौ सोने के सिक्के दे दिये।

इसे देखने वाले बशीर नामक एक अमीर ने गरीब का वेश बनाया। अपने निजी पचास सोने के सिक्के लेकर खलीफ़ा के सामने पहुँचा और बड़ी विनय से बोला–"सरकार, कल आप ने मुझे अनाज का जो बोरा दिया, उसमें से ये पचास सोने के सिक्के मिल गये। इन्हें मैं न्यायपूर्वक वापस ले आया हूँ। आप कृपया इन्हें स्वीकार कर लीजिए।"

बशीर का यह विश्वास था कि उसे इसके बदले में पांच सौ सोने के सिक्के प्राप्त हो जायेंगे।

अब्दुल अजीज ने बशीर की ओर आश्चर्यपूर्ण दृष्टि से देखा। बशीर बहुत बड़ा अमीर था। साथ ही वह खाऊ ज्यादा था। इस कारण वह मोटा-तगड़ा भी था। उसने गरीब का वेश तो बना लिया था, किंतु उसके दायें हाथ की उंगलियों में चार सोने की अंगूठियों तथा दायें हाथ की उंगलियों में पड़ी दो हीरे की अंगूठियों को भी निकालना भूल गया और वैसे ही जल्दबाजी में चला आया था। उन्हीं के द्वारा उसके असली रूप का पता चल गया। खलीफ़ा को यह समझते देर न लगी कि बशीर वास्तव में गरीब नहीं है, बल्कि वह ज्यादा सिक्के कमाने के ख़्याल से लोभ में पड़कर आया हुआ है। इस पर खलीफ़ा ने अपने वज़ीर से कहा–"वज़ीर साहब! इसके हाथ से सोने के सिक्के लेकर खजाने में जमा करवा दो। इसने ईमानदारी से हमें इन्हें लौटा दिया है, इसलिए इसके नाम एक ईमानदारी का पत्र लिख कर दिलवा दो।"

ये शब्द सुनने पर बशीर के चेहरे पर काटो तो खून न था।
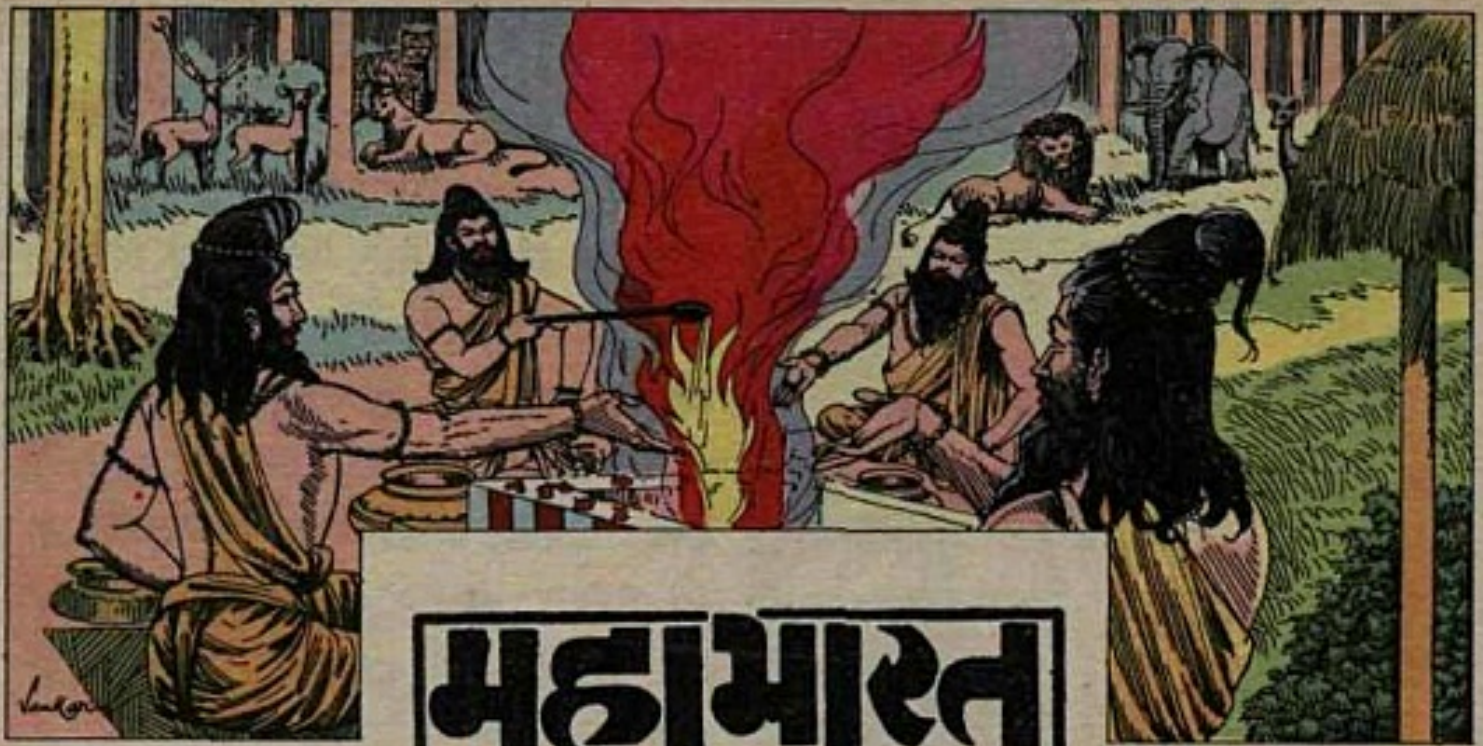
धृतराष्ट्र ने अपने अतिथियों को बड़े ही आदर के साथ कंद, मूल और फल खिलाये और उनके ठहरने का बड़ा अच्छा प्रबंध भी कराया। उस रात को पांडव अपनी माता के चारों तरफ़ लेट गये। दूसरे दिन वे लोग नारियों तथा पुरोहितों को साथ ले आस-पास के प्रदेश देखने गये। एक स्थान पर उन्हें अग्नि वेदियाँ दिखाई दीं जिन में आग जल रही थी। उनके सामने बैठकर अनेक मुनि होम कर रहे थे। वहाँ पर अनेक प्रकार के जानवर निडर हो स्वेच्छापूर्वक संचार कर रहे थे। इसी भांति तरह-तरह के पक्षी भी स्वेच्छा के साथ विचरण कर रहे थे। पांडवों ने उस आश्रम में घूम कर देखा। वहाँ का वातावरण बड़ा ही शांत एवं मनोहर था। पांडव बहुत प्रसन्न हुए और उन सबने वहाँ मुनियों को विविध प्रकार के चर्म एवं कंबल भेंट किये। तब वे पुनः धृतराष्ट्र के पास लौट आये।

उस वक़्त महर्षि व्यास अपने शिष्यों के साथ वहाँ पर आ पहुँचे। उन्होंने धृतराष्ट्र का परामर्श किया–"राजन, वनवास तुम्हारे लिए सुखप्रद है न? पुत्र-शोक तुम्हें इस समय व्यथित नहीं कर रहा है न? गांधारी तुम्हारे कारण कष्ट तो भोग नहीं रही हैं न? कुंती देवी तुम दोनों का अच्छा उपचार कर रही हैं न? मैं समझता हूँ, तुम्हारेलिए यहाँ पर किसी बात का अभाव खटक नहीं रहा है!"

६४. धृतराष्ट्र की मृत्यु

इसके बाद व्यास ने विदुर के जन्मवृत्तांत का रहस्य सुनाया–"विदुर ही वास्तव में युधिष्ठिर है। महामुनि मांडव के श्राप के कारण यमराज विदुर के रूप में तुम्हारा भाई होकर पैदा हुआ है। वही यमराज अपने योग बल से युधिष्ठिर भी बन गया है। इसलिए विदुर युधिष्ठिर में ऐक्य हो गया है। यही उसके जन्मधारण का असली रहस्य है। इसके वास्ते उसने अपने योग बल का उपयोग किया है।"

पांडवों ने अपने परिवार के साथ उस आश्रम में एक महीना बिताया। इसके बाद व्यास महर्षि पुनः एक बार वहाँ पर आ पहुँचे। अनेक कथा-कहनियाँ सुनाकर सबका मनोरंजन किया। इस बीच उस स्थान पर मुनि नारद, पर्वत, देवल, विश्वावसु, तुंबुर तथा चित्रसेन भी आये। धृतराष्ट्र की अनुमति लेकर युधिष्ठिर ने सब का उचित रूप में आदर-सत्कार किया। तब वहाँ पर व्यास, अन्य अतिथि, पांडव, धृतराष्ट्र, आदि के साथ गांधारी, कुंती, द्रौपदी, सुभद्रा इत्यादि नारियाँ भी आ बैठीं। प्राचीन महर्षियों तथा देवता एवं असुरों की कहानियाँ भी कही व सुनी गयीं।

एक बार धृतराष्ट्र ने महर्षि व्यास से अपना हृदय खोलकर यों कहा–"आपके आने से मेरा जन्म सफल हो गया। मुझे परलोक का डर नहीं है। लेकिन मेरी चिंता तो यही है कि मेरे पुत्रों की दुष्ट बुद्धि के कारण पुण्यात्मा पांडवों ने अपमान का अनुभव किया। अनेक युवक युद्ध में प्राण खो बैठे। मैं नहीं जानता कि युद्ध में मरे हुए मेरे पुत्रों तथा पोतों को न मालूम कौन लोक प्राप्त होगा? रात-दिन मुझे यही चिंता सता रही है। इसलिए मैं एक दम अशांत बना हुआ हूँ।"

धृतराष्ट्र के मुँह से ये शब्द निकलते ही गांधारी का दुख उमड़ पड़ा। उसके स्वर में स्वर मिला कर कुंती, द्रौपदी, सुभद्रा तथा अन्य स्त्रियाँ रोने लगीं।

गांधारी ने हाथ जोड़ कर व्यास को प्रणाम करके बताया–"मेरे पुत्रों का देहांत हुए सोलह साल बीत गये। तब से मेरे पति रात-दिन उनके वास्ते विलाप कर रहे हैं। द्रौपदी अपने पुत्र तथा भाइयों के वास्ते रो रही है। सुभद्रा अभिमन्यु के वास्ते रो रही है। भूरिश्रव की पत्नी अपने ससुर, पति, व पुत्रों को खोकर उनकी याद में विलाप कर रही है। हमारे पुत्रों की सौ पत्नियाँ व्यथित हैं। इन सभी लोगों के दुख को दूर करने का कोई उपाय हो तो बताइए।"

व्यास ने कुंती देवी से पूछा–"बताओ, तुम्हारे मन में कोई दुख है, वह क्या है?" उसने बताया कि वह कर्ण के वास्ते विलाप कर रही है।

तब व्यास ने गांधारी से कहा–"तुम अपने पुत्रों तथा सभी रिश्तेदारों को भी देखोगी। कुंतीदेवी कर्ण को, सुभद्रा अभिमन्यु को, द्रौपदी अपने पुत्र, पिता व भाइयों को भी देखेगी। यह विचार मेरे मन में पहले से ही था। उसे तुमने व कुंती ने प्रकट किया। तुम्हें किसी के भी वास्ते दुखी होने की आवश्यकता नहीं। महा भारत युद्ध में मृत्यु को प्राप्त हुए सभी लोग या तो देवता हैं या राक्षस। धृतराष्ट्र एक गंधर्व राजा हैं। पांडु राजा मरुत्त गण से संबंधित हैं। विदुर तथा युधिष्ठिर यमराज के अंश से पैदा हुए हैं। इसी प्रकार दुर्योधन कलि, शकुनि द्वापर है। दुश्शासन आदि सभी राक्षस अंश के हैं। भीम वायु के अंश में, अर्जुन नर नामक एक महर्षि के अंश में, नकुल व सहदेव अश्वनी देवताओं के अंश में, अभिमन्यु चंद्र के अंश में, द्रौपदी तथा धृष्टद्युम्न अग्नि के अंश में पैदा हुए हैं। शिखंडी राक्षस के अंश में पैदा हुई है। इसी भांति बृहस्पति के अंश में द्रोणाचार्य, शंकर के अंश में अश्वत्थामा, पैदा हुए हैं।

भीष्म वसुओं में से एक हैं। तुम सब लोग विलंब किये बिना अभी भागीरथी के

तट पर जाओ। युद्ध में मरे हुए सभी लोगों को तुम्हें वहाँ पर दिखा कर मैं तुम्हारे दुख को दूर करूँगा।"

ये बातें सुनते ही सब का उत्साह उमड़ पड़ा। फिर क्या था, उसी वक़्त सब लोग गंगा के तट की ओर चल पड़े। धृतराष्ट्र अपने साथ पाँडव, मुनि तथा अन्य लोगों को लेकर चल पड़ा। सब लोग गंगा के तट पर पहुँच कर उचित स्थान में दिन भर विश्राम करते रहें। सूर्यास्त हो गया। सबने तत्काल स्नान करके कालकृत्य समाप्त किये।

इसके उपरांत सब लोग महर्षि व्यास के पास पहुँचे। तब व्यास ने गंगा जल में डुबकियाँ लगायीं और पाँडव तथा कौरव योद्धाओं, महा भारत के युद्ध में मृत्यु को प्राप्त सभी वीरों को भी व्यास ने उच्च स्वर में पुकारा।

तुरंत नदी के तट पर बड़ा कोलाहल सुनाई दिया। भीष्म, द्रोण आदि एक-एक करके नदी में से तट की ओर आने लगे। विराट, द्रुपद, उप पांडव, अभिमन्यु, घटोत्कच, कर्ण, दुर्योधन, इत्यादि पहले जिन-जिन पोशाकों में युद्ध भूमि में गये थे, उन्हीं वेषों में, उन्हीं वाहनों पर गंगा जल में से बाहर आये। अब उनके बीच कोई शत्रुता नहीं थी! व्यास ने अपने तपोबल से धृतराष्ट्र को दृष्टि प्रदान की। गांधारी तथा धृतराष्ट्र अपने-अपने आत्मीय व्यक्तियों को दिल खोल कर अच्छी तरह देख पाये। बाक़ी लोगों को भी मृत व्यक्तियों को इस प्रकार प्रकट होते देख एक अद्भुत-सा प्रतीत हुआ और उनके शरीर पुलकित हो उठे।

जीवित व्यक्तियों ने मृत व्यक्तियों के साथ मिलकर अनुपम आनंद प्राप्त किया। पांडव कर्ण, अभिमन्यु तथा उपपांडवों से मिले। वह रात सबने बड़ी प्रसन्नता के साथ बिताई। इसके बाद मृत व्यक्ति जैसे प्रकट हुए, उसी प्रकार गंगा में प्रवेश

संजय तथा याजक ब्राह्मण अग्निहोत्र ले गये। गंगा द्वार के पास तुम्हारे काकाजी ने वायुभक्षण करते छे महीनों तक कठोर तप किया। गांधारी ने केवल जलग्रहण किया। कुंती ने मासोपवास का व्रत लिया। संजय ने दिन में एक जून भोजन किया। याजक अनवरत अग्निहोत्र करते रहें। इसके बाद धृतराष्ट्र किसी का ख्याल किये बिना वनों में घूमने लगे। गांधारी और कुंती उनके पीछे चलती रहीं। कुंतीदेवी गांधारी का सदा सर्वदा ख्याल रखती थी। इतने में एक दिन धृतराष्ट्र गंगा में स्नान करके अपने आश्रम की ओर लौट रहे थे, तब प्रचण्ड वायु बह चली जिससे देखते-देखते आग सारे जंगल में फैल गयी।

दावानल के अपने निकट आते जानकर धृतराष्ट्र ने संजय से कहा–"तुम इसी वक़्त उस दिशा में चले जाओ, जिस ओर अग्नि न हो। हम इस आग में जलकर उत्तम लोकों को प्राप्त हो जायेंगे। हमारे विचार को अब कोई बदल नहीं सकता। तुम्हें मेरे इस अंतिम आदेश का पालन करना ही होगा।"

संजय ने बड़ी आतुरता के साथ कहा–"राजन, आप का अग्नि में जल मरना मुझे पसंद नहीं है। आग ने चारों तरफ़ से आपको घेर लिया है। अब क्या करे?"

"संजय, तपस्वी लोग वायु, जल और अग्नि–इनमें से किसी के द्वारा भी मरने को तैयार हो जाते हैं। तुम विलंब न करके यहाँ से चले जाओ।" धृतराष्ट्र ने उसे आदेश दिया।

संजय ने धृतराष्ट्र, कुंती तथा गांधारी की भक्ति एवं श्रद्धापूर्वक प्रदक्षिणा की और उन्हें योगसमाधिस्थ हो जाने को कहा। तीनों ने ऐसा ही किया। उनके शरीर लकड़ियों जैसे हो गये। संजय दावानल से निकलकर गंगा तट पर पहुँचा और नारद को देखा। धृतराष्ट्र, गांधारी

तथा कुंती दावानल में जल गये। यह बात संजय नारद को सुनाकर हिमालयों में चले गये।

यह समाचार मिलते ही पांडव के साथ सारे नगरवासी शोक में डूब गये। इस पर नारद ने युधिष्ठिर को समझाया कि दावानल के लिए कारण बनी हुई अग्नि धृतराष्ट्र की ही है, अपनी अग्नि के द्वारा मृत्यु को प्राप्त करके धृतराष्ट्र उत्तम लोक को प्राप्त हुए हैं।

युधिष्ठिर ने गंगा के निकट पहुँचकर मृत व्यक्तियों के लिए जल तर्पण किये। बाद श्राद्ध करके बारहवें दिन दान आदि किये। महाभारत युद्ध की समाप्ति के अट्ठारह वर्ष बाद धृतराष्ट्र की मृत्यु हो गयी। उनमें अंतिम तीन वर्ष उन्होंने वनवास में बिताये थे।

धृतराष्ट्र की मृत्यु के बाद और अट्ठारह वर्ष तक युधिष्ठिर ने राज्य किया। उस वक़्त उन्हें एक भयंकर समाचार मिला। वह यह कि मूसल के कारण समस्त यादव मर गये हैं। केवल कृष्ण और बलराम बच गये हैं।

युधिष्ठिर ने अपने भाइयों को बुलाकर पूछा—"सुनते हैं कि यादव सब आपस में लड़ मरे हैं। अब बताओ, हमें क्या करना है?"

यादवों के विनाश का कारण यों था:

एक बार विश्वामित्र, कण्व तथा नारद महर्षि द्वारका में गये। उन्हें आते देख सारण इत्यादि यादवों ने सांबु को औरत का वेष बनाया। उसे मुनियों को दिखाकर पूछा—"यह तो गर्भवती है। इसका पति लड़का चाहता है। तुम लोग बताओ कि इसका कौन शिशु होनेवाला है?"

इस पर मुनियों ने जवाब दिया—"वृष्ठि एवं अंधकों का विनाश करनेवाला एक मूसल सांबु के गर्भ से पैदा होगा।"

इसके बाद मुनियों ने कृष्ण के दर्शन करके उन्हें वास्तविक समाचार सुनाया। कृष्ण ने यह समाचार ज्ञात करके मन में निश्चय कर लिया कि मुनियों का श्राप व्यर्थ नहीं जायेगा।

मित्र-भेद

[१२]

गड्ढे में से बाहर आये तीनों जानवरों ने ब्राह्मण से कहा–"गड्ढे में रहनेवाला व्यक्ति महान पापी है। उसे बाहर मत निकालो। उसकी बात पर यक़ीन मत करो।"

इसके बाद बाघ ने ब्राह्मण से कहा–"दूर पर एक पहाड़ को देखते हो न? उसकी उत्तरी दिशा की घाटी में मेरा निवास है। तुम यदि वहाँ पर आ जाओ तो तुम्हारे उपकार का प्रत्युपकार करके में तुम्हारे ऋण को चुका लूंगा।"

बाघ के जाते ही बंदर ने कहा–"जहाँ बाघ रहता है, उसके सामने एक जल प्रपात है। उसके समीप में स्थित बरगद मेरा निवास है। तुम जरूरत पड़ने पर वहाँ आ जाओ।"

"तुम जब भी खतरे में फँस जाओगे तो मेरी याद करो।" सांप यह कहकर चला गया।

सभी जानवरों के चले जाने पर गड्ढे में रहनेवाले व्यक्ति ने चिल्लाकर कहा–"हे ब्राह्मण, मुझे भी बाहर निकालो।"

ब्राह्मण ने उसको अपने जैसे एक मानव समझकर गड्ढे से बाहर निकाला।

बाहर आने पर उस व्यक्ति ने कहा–"मैं भरुकच्छ का निवासी सुनार हूँ। तुम कभी सोने के गहने बनवाना चाहोगे तो मेरे पास आ जाओ।" यह कहकर सुनार चला गया।

इसके बाद ब्राह्मण कई दिन जीविका की खोज में भटकता रहा, पर वह कुछ कमा नहीं पाया। वह निराश हो घर

अंतिम पृष्ठ का चित्र

हैं। इसलिए तुम इन्हें लेकर खुशी से अपने घर चले जाओ।"

ब्राह्मण उन गहनों को लेकर सुनार के पास इस आशा से चला गया कि वह उन्हें बेचकर दाम दिलवा देगा और उस धन से वह अपना परिवार चलायेगा।

सुनार ने ब्राह्मण का स्वागत किया। उसके चरण धोकर आसन पर बिठाया। बढ़िया भोजन खिलाकर पूछा—"अब आप आदेश दीजिए। मेरे द्वारा कोई उपकार हो सकता है तो करने के लिए तैयार हूँ।"

"मैं थोड़ा सोना ले आया हूँ। इसे बिकवा दो।" ब्राह्मण ने कहा।

सुनार ने ब्राह्मण के हाथ से गहने लिये, उन्हें देखते ही उसने समझ लिया कि उसने वे आभूषण राजकुमार के लिए तैयार कर दिये हुए हैं। उस राजकुमार की खोज करने पर एक घने जंगल के बीच उसकी लाश मिल गयी थी। मगर उसके गहने नहीं मिले थे। राजा ने निश्चय कर लिया कि राजकुमार की हत्या की गई है, उसने तुरंत यह घोषणा की थी कि जो व्यक्ति हत्यारे को पकड़वा देगा, उसको मुँह मांगा इनाम दिया जाएगा। सुनार ने अब इन गहनों को देख सोचा कि यही ब्राह्मण हत्यारा होगा। उसने मन में निश्चय कर लिया कि ब्राह्मण को

की ओर चल पड़ा। लौटती यात्रा में वह बंदर के स्थान पर पहुँचा। बंदर ने उसे मधुर फल खाने को दिये। फल खाकर उसने अपनी भूख मिटायी।

तब बंदर ने कहा—"तुम्हें फल चाहो तो रोज़ यहाँ पर आ जाओ।"

"तुम्हारा ऋण चुक गया। अब मुझे बाघ को दिखाओ।" ब्राह्मण ने पूछा।

बंदर ने उसे बाघ को दिखाया। बाघ ने उसे एक चन्द्रहार तथा अन्य आभूषण देकर कहा—"किसी राजकुमार का घोड़ा उसे गिराकर भाग गया। राजकुमार उसी वक़्त मर गया है। उसके सारे आभूषण निकालकर मैंने तुम्हारे लिए छिपा रखे

राजा के हाथ सौंपकर पुरस्कार प्राप्त कर ले।

"महाशय, तुम यहीं पर रह जाओ। मैं दो-चार जौहरियों को ये आभूषण दिखाकर अभी लौट आता हूँ।" यों कहकर सुनार सीधे राजमहल में गया। राजा को वे आभूषण दिखाकर बताया कि इन आभूषणों को लानेवाला ब्राह्मण उसके घर पर है।

राजभटों ने जाकर ब्राह्मण को बन्दी बनाया और राजा के सामने हाज़िर की। ब्राह्मण की कैफ़ियत सुने बिना राजा ने उसे मृत्युदण्ड सुनाया।

उस समय ब्राह्मण ने सांप की याद की। कुछ ही मिनटों में सांप ने आकर पूछा–"मेरे द्वारा तुम्हें कैसी मदद चाहिए?"

"मुझे इन बंधनों तथा क़ैद से भी मुक्त करो।" ब्राह्मण ने कहा।

सांप ने ब्राह्मण के कान में कुछ कहा, तब उसने जाकर रानी को डस लिया। फिर क्या था, अंत:पुर में रोने की आवाज़ सुनाई दी। सारा शहर शोक में डूब गया। वैद्य, मांत्रिक आदि ने आकर मंत्र-तंत्र किये, मगर रानी होश में न आई।

राजा ने निराश हो यह ढ़िंढोरा पिटवा दिया कि जो व्यक्ति रानी को जिलायेगा, उसे बहुत बड़ा पुरस्कार दिया जाएगा। ढ़िंढोरा सुनकर क़ैद में रहनेवाले ब्राह्मण ने बताया कि वह रानी को जिलाएगा। तुरंत उसे क़ैद से मुक्त करके राजा के पास ले गये। राजा ने उसे रानी का इलाज करने की अनुमति दी। ब्राह्मण के द्वारा रानी के हाथ का स्पर्श करते ही जहर जाता रहा और रानी ने आँखें खोल दीं।

राजा ने परम आनंदित हो ब्राह्मण को अपार उपहार दिये और पूछा–"विप्रवर, तुम्हें ये गहने कैसे प्राप्त हुए?" ब्राह्मण ने सारा वृत्तांत कह सुनाया। राजा ने कृतघ्न सुनार को दण्ड दिया और ब्राह्मण को

अपना मंत्री नियुक्त किया, उसे अनेक गाँव दिये। इसके बाद ब्राह्मण अपनी पत्नी व बच्चों को ले आया, आराम से अपने दिन बिताने लगा।

पिंगलक को कृतघ्न की कहानी सुनाकर दमनक ने यों कहा:

"मनु ने कहा था कि चाहे मित्र हो, बंधु हो, गुरु हो या राजा, जो भी अपराध करे, तो उसे दण्ड मिलना चाहिए। यह बैल द्रोही है। आपको भी उसके साथ ऐसा ही व्यवहार करना चाहिए। उसके साथ मैत्री करना सांप की बांबी पर लेटने के समान होगा, जलनेवाले घर में निवास करने के बराबर होगा।"

"तुमने जो कुछ कहा, ठीक है, इसलिए मैं उसे चेतावनी दे देता हूं।" पिंगलक ने कहा।

"क्या कहा? चेतावनी देंगे! ऐसे व्यक्ति के साथ कथनी काम नहीं देती, करनी होनी चाहिए। आपकी आड़ में उसने अब तक काफी दिन बिताये। खटमल की कहानी की भांति उसको भी तुरंत मार डालना चाहिए।" दमनक ने कहा।

"वह कहानी कैसी?" पिंगलक ने पूछा। दमनक ने यों सुनाया:

खटमल की कहानी

प्राचीन काल में एक राजा था। उस राजा का शयनागार अत्यंत सुंदर था। उसमें एक मुलायम बिस्तर था। उस बिस्तर की तहों में एक सफ़ेद चादर के नीचे मंदविसर्पिणी नामक एक मादा जूं रहा करती थी। रोज चादर बदलते वक़्त वह बड़ी होशियारी से बच निकलती थी। रात के वक़्त ज्यों ही राजा आकर लेटकर सो जाता, त्यों ही वह जूं राजा के सिर में प्रवेश करती और उसका खून चूस लेती। वह ऐसी सावधानी से राजा का खून चूसती कि राजा की नींद उचट नहीं जाती थी। इस प्रकार राजा का खून लगातार चूसकर वह जूं एकदम मोटी बन गई और सुखपूर्वक जीने लगी।

१५१. विचित्र पहाड़

क्वांग्सी राज्य (चीन) में ये चूने के पहाड़ बड़े ही अनोखे हैं। इनके संबंध में एक कहानी सुनाते हैं। सैकड़ों साल पहले एक चित्रकार ने इन पहाड़ों में से एक चोटी पर चढ़कर वहाँ से दीखनेवाली पहाड़ी श्रेणियों को चित्रित किया। उसके चित्र सारे चीन में लोकप्रिय हो गये; इसलिए सभी प्रांतों के लोग उन पहाड़ों का उसी प्रकार चित्रण करने लगे। वास्तव में इस प्रकार के पहाड़ क्वांग्सी राज्य के सुदूर कोनों में ही हैं।
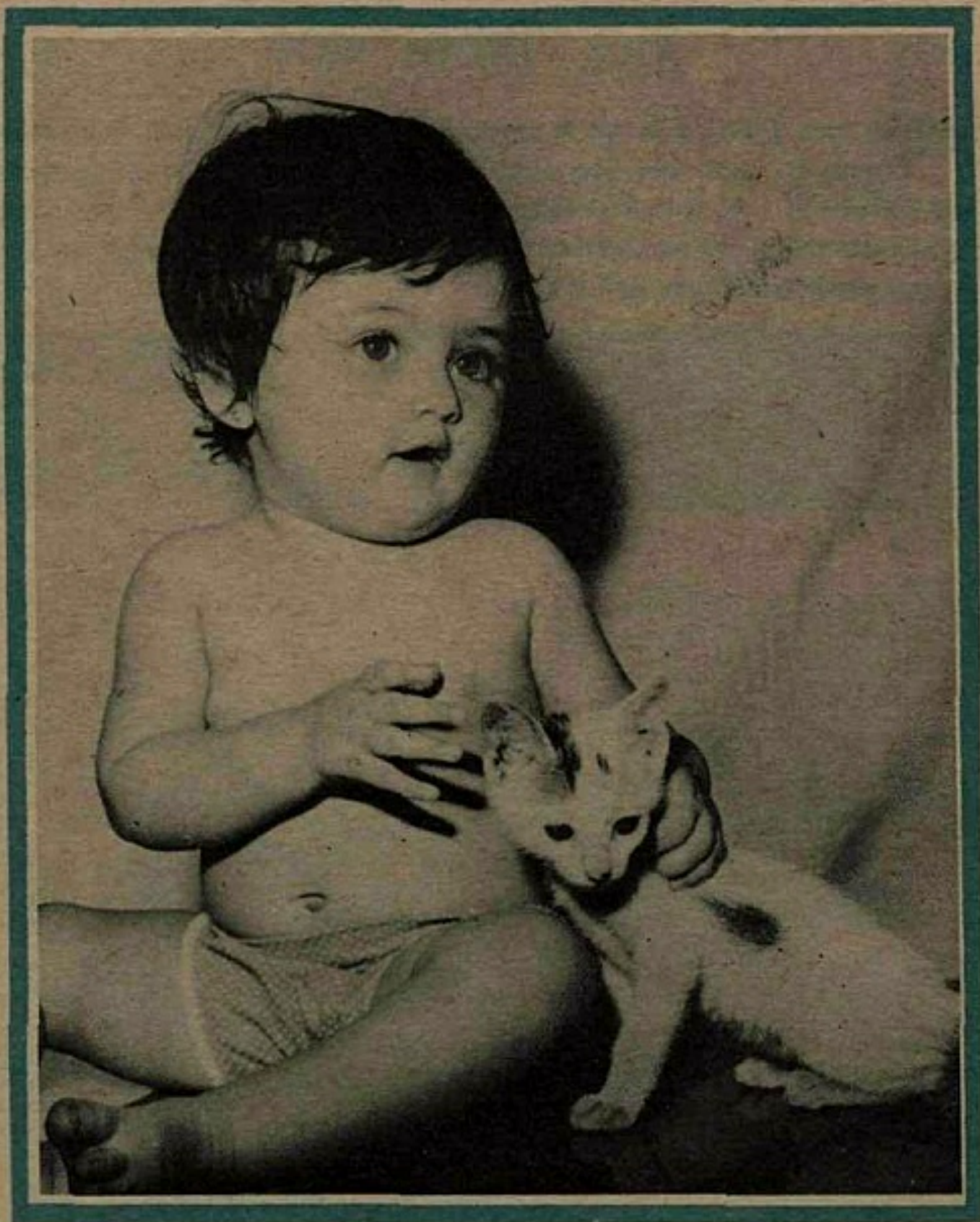
पुरस्कृत परिचयोक्ति

पुकारने पर आ गई

प्रेषक : बी. रामुलु शेट्टी

Photo by S. B. Takalkar

श्री कसेट्टी काटन इन्डस्ट्रीस
प्रोद्दूर, कडपा जिला

भगाने पर न गई

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २०)

★

* परिचयोक्तियाँ अगस्त ५ तक प्राप्त होनी चाहिए। सिर्फ़ कार्ड पर ही लिख भेजें।
* परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबंधित हों, पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ अक्तूबर के अंक में प्रकाशित की जायंगी !

चन्दामामा

इस अंक की कथा-कहानियाँ-हास्य-व्यंग्य

Printed by B. V. REDDI at The Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Chandamama Publications, 2 & 3, Arcot Road, Madras-600026. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

WIZARD'S CASTLE

मित्र-भेद